LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

सद्भावना

विशाल चुनौतियां
विशालतम अवसर

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री सलिल विश्वनाथ

(कार्यकारी निदेशक मा.सं.वि./सं.वि.)

प्रधान संपादक

श्री राजेश मिढा

सचिव (मा.सं.वि.)

संपादक

सुश्री इन्द्रप्रीत गुलाटी

सहयोग

श्री अनुज मिश्र

श्री हिमांशु

श्री परविंदर कुमार

सुश्री प्रज्ञा कुलकर्णी

सुश्री नीलम राशि लुगुन

निगम गीत

आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित सांझ सकारे
सम्यक संचय और निवेशन
जन जन का ही हत संवर्धन
निगम नीति का उच्च लक्ष्य है
व्यक्ति और परिवारोत्थान
लोक हितैषी सेवा दीक्षा
जन मन प्रेरित सतत सुरक्षा
योगक्षेम ही परमध्येय है
निगम हमारा प्रिय संस्थान
उठो निगम के सच्चे सेवक
अभिकर्ता जन और प्रबंधक
बुला रहे है कार्य लोकहित
तुम पर निर्भर जन कल्याण
आओ प्यारे साथ हमारे
जन सेवा हित सांझ सकारे

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

भारतीय जीवन बीमा निगम
केन्द्रीय कार्यालय की
राजभाषा पत्रिका वर्ष-2023

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के
अपने है, संपादक या भारतीय जीवन बीमा
निगम का उससे सहमत होना जरुरी नहीं है

अनुक्रमणिका

क्रमांक		पृष्ठ क्रमांक
1	अनुक्रमणिका	3
2	अध्यक्ष का संदेश	4
3	प्रबंध निदेशक गणों का संदेश	5-7
4	कार्यकारी निदेशक का संदेश	9
5	प्रधान संपादक की कलम से	10
6	संपादकीय	11
7	आजादी के 75 वर्ष	12-13
8	विपणन में भाषा का महत्व	14-15
9	एक विचार, मीठी वाणी	16
10	सेवा विश्वास के 66 वर्ष	17
11	फिर नया जन्म मिला है मुझे (दो कविताए)	18-19
12	लघु कथा दर्द को सहना, कविता	20
13	एक औरत लघु कथा, कविता	21
14	राजभाषा विविध गतिविधियां	22-23
15	बुनियादी शिक्षा बनाम राजभाषा हिन्दी, कविता	24-25
16	क्या प्लानिंग है (कविता)	26
17	शक्ति पुंज (कविता)	27
18	मंजिल, हिम्मत (कविता)	28
19	सही चाल (कविता)	29
20	कहानी लालच, कविता	30-31
21	लीची	32-33
22	कृत्रिम बुद्धिमता, कविता	34-35
23	संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी के बढ़ते कदम	36-37
24	हिन्दी के प्रयोग के लिए तकनीकी सुविधाएं	38-39
25	इत्मीनान	40
26	भारतीय पुरातत्व से संबन्धित जानकारी	41
27	संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निगम का निरीक्षण	42

अध्यक्ष महोदय का संदेश

केंद्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

भाषा किसी भी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक पहलुओं को जानने व समझने का सशक्त एवं प्रभावी साधन है। भाषा देश की सभ्यता एवं संस्कृति को अगली पीढी तक ले जाने का एक सटीक माध्यम है। भारतवर्ष में हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें सर्वसाधारण की भावनाओं को अभिव्यक्त करने की पूर्ण क्षमता है।

निगम का एक प्रमुख लक्ष्य है - देश के सभी बीमा योग्य व्यक्तियों तक पहुंचकर उन्हे जीवन बीमा की पर्याप्त वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना तथा आर्थिक रुप से पिछडे लोगों में भी बीमा का प्रचार प्रसार करना। इस लक्ष्य की प्राप्ति तथा बीमाधारकों से प्रभावी संबंध कायम रखने में हिंदी एक महत्वपूर्ण कडी का काम करती है। वास्तव में आज के परिवेश में राजभाषा कार्यान्वयन मात्र हमारा संवैधानिक दायित्व न होकर हमारे व्यवसाय वृद्धि का एक आवश्यक अंग भी बन गया है क्योंकि हिंदी आज बाजार की भाषा बन गयी है । विदेशी कंपनियां भी अपने उत्पादों का विपणन इसी भाषा में कर रही है।

वर्तमान में निगम का प्रत्येक कार्यालय आधुनिक तकनीक की सहायता से राजभाषा हिंदी में कार्य करने में सक्षम हो गया है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूं कि आप यह संकल्प करें कि कार्यालय के अधिकतम कार्यों को हिंदी में करेंगें ताकि हम भारत सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा लक्ष्यों के अनुरुप कार्य प्रदर्शन कर सकने में सफल होंगें । हम सभी को मिलकर सूचना प्रौद्यौगिकी की सहायता से राजभाषा हिंदी का अधिकतम प्रयोग करते हुए निगम को उत्कृष्टता के शिखर पर ले जाना है। इससे हम निगम की इस वित्तीय वर्ष की थीम "विशाल चुनौतियाँ - विशालतम अवसर" को सार्थक करने में सफल होंगे।

आशा है, "सद्भावना" पत्रिका राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं निगम को उत्कृष्टता के शिखर पर ले जाने में में सहायक सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित,

सिद्धार्थ महान्ति
अध्यक्ष

धैर्य संतोष की कुंजी है। **हजरत मुहम्मद**

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

केंद्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका सद्भावना के माध्यम से आप सभी से संपर्क स्थापित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिंदी का स्थान विश्व की अग्रणी भाषाओं में से है। भारत में हिंदी संपर्क भाषा व जनमानस की भाषा के रुप में ऊभर कर आयी है। पूरे देश को एक सूत्र में बांध कर रखने की क्षमता के कारण ही हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है।

आज की व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के परिवेश में हम हिंदी के द्वारा पूरे भारतवर्ष में अपने बीमा व्यवसाय को बेहतर ढंग से प्रचारित व प्रसारित कर सकते हैं। हिंदी अभिव्यक्ति का सहज एवं सशक्त माध्यम है और भारत के बहुसंख्य नागरिकों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा है।

साथियों, यह हमारा दायित्व है कि हम जिस भी स्तर पर कार्यरत हो, अपने सहकर्मियों को हिंदी में अधिकाधिक कार्य तथा संवाद करने के लिए प्रोत्साहित करें एवं प्रेरित करें। हिंदी को अपनाकर ही हम निगम के व्यवसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में तथा सरकार द्वारा राजभाषा हेतु निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों के अनुरुप कार्य करने में भी सफल होंगें।

मुझे विश्वास है कि "सद्भावना" का प्रकाशन इस दिशा में एक सार्थक प्रयास होगा।

शुभकामनाओं सहित,

एम. जगन्नाथ
प्रबंध निदेशक

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है।

राजभाषा पत्रिका को प्रकाशित करने के पीछे की मूल भावना हिंदी भाषा में अधिकाधिक कार्य करने की सोच को विकसित करना है। मुझे उम्मीद है कि पत्रिका के माध्यम से अधिक से अधिक कार्मिक राजभाषा से जुडे पहलुओं को पढकर, हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित होंगें।

हिंदी मात्र एक भाषा ही नहीं, हमारी संस्कृति की परिचायक भी है। ग्राहकोन्मुखी व्यवसाय में भाषा का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। राजभाषा हिंदी संपूर्ण भारतवर्ष में हमारे ग्राहकों तक पहुंचने तथा उन्हे सर्वोत्कृष्ट सेवा प्रदान करने का एक सशक्त एवं प्रभावी माध्यम है। हिंदी भारत की राजभाषा के साथ-साथ संपर्क भाषा के रुप में निरंतर अपना प्रभाव बढाती जा रही है। इसका प्रयोग डिजिटल जगत में भी दिन-प्रतिदिन बढ रहा है। भारत का विशाल जनाधार हिन्दी भाषी होने से इसका महत्व और भी बढ जाता है।

सफलता निरंतर प्रयास का एक सार्थक परिणाम होती है। राजभाषा के संदर्भ में हमारी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम राजभाषा के लिए निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो पाते हैं अथवा नहीं। सूचना प्रोद्यौगिकी के युग में आज कम्प्यूटर पर हर काम हिंदी में संभंव है। हमारे कार्यालयों में ई-फीप साफ्टवेअर पर हिंदी में कार्य करने की सुविधा भी उपलब्ध है। हमें कार्यालय के कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए, ताकि हम राजभाषा के लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ संवैधानिक दायित्वों का भी निर्वहन कर सकें।

मुझे आशा है कि "सद्भावना" पत्रिका के प्रकाशन से निगम का राजभाषा कार्यान्वयन और अधिक प्रभावी होकर उत्कृष्टता के शिखर पर पहुंचेगा।

शुभकामनाओं सहित,

तबलेश पांडे
प्रबंध निदेशक

ध्यान ही मोक्ष प्राप्त करने का एकमात्र राजमार्ग है । **स्वामी शिवानंद**

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि हमारे केन्द्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के नए अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से आपको संबोधित करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है कि राजभाषा पत्रिका निगम के कामकाज में तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपनी सशक्त भूमिका निभा रही है ।

आज बीमा क्षेत्र चुनौतियों से भरा हुआ है और ग्राहक की जागरुकता व अपेक्षाएं बढ चुकी है। बीमा एक तकनीकी विषय है, इस विषय को आसान बनाकर आम जनता तक पहुचाने में हिन्दी भाषा का सहयोग लाभकारी होगा। इससे ग्राहकों को हमारे जीवन बीमा उत्पादों की अच्छी जानकारी होगी व उनके प्रति हमारे कामकाज में पारदर्शिता भी बनी रहेगी, जो कि किसी भी संस्था की उन्नति के लिए आवश्यक है।

साथियों पिछ्ले कुछ वर्षों से कम्पयूटर, इंटरनेट और मोबाइल ने विश्व में सूचना क्रांति ला दी है। आज कोई भी भाषा कम्प्यूटर तथा अन्य इलेक्ट्रानिक उपकरणो से दूर रह कर लोगों से जुड नही सकती। अनेक हिंदी ई-टूल्स विकसित किए गए है जिससे कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अत्यंत सरल हो गया है।

राजभाषा हिंदी में कार्य करने में हमें कोई व्यवहारिक कठिनाई नही होनी चाहिए। मेरा आपसे आग्रह है कि आप आपनी सकारात्मक सोच, आशावादी दृष्टिकोण तथा उत्साहित मन से अपने सम्माननीय बीमाधारकों को उनकी ही भाषा में सेवा प्रदान करने का संकल्प लेकर जीवन बीमा निगम को प्रगति पथ पर ले जाए।

मुझे विश्वास है कि "सद्भावना" का प्रकाशन इस दिशा में एक सार्थक प्रयास होगा।

शुभकामनाओं सहित,

सतपाल भानू
प्रबधं निदेशक

प्रबंध निदेशक महोदय का संदेश

केंद्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के माध्यम से प्रथम बार आपसे संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है । हिन्दी जनसाधारण की भाषा है । हिंदी सरल और दिलों को जोडने वाली भाषा होने के कारण देश को एकता की कडी में पिरोने में सहायक है। हम सुरक्षामय सेवा और विश्वास के साथ अपने 67 वर्ष पूर्ण कर चुके है । चूंकि जीवन बीमा का व्यवसाय व्यक्तियों के कल्याण से जुड़ा है, इसलिए ग्राहकों की बढ़ती अपेक्षाओं को समझना आज के सेवा क्षेत्र की सबसे बड़ी चुनौती है । ग्राहक से उसकी भाषा में संवाद करके हम बेहतर सेवा प्रदान कर सकेंगें तथा हिंदी के प्रयोग से हम भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को भी प्राप्त करने में भी सफल होंगे।

पूरे भारतवर्ष में निगम के सभी कार्यालयों में उपलब्ध कराए गए विन्डोज एक्सपी कम्प्यूटरों में उपलब्ध इनबिल्ट हिन्दी सुविधा की सहायता से हमें अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करना है। इसके लिए हमें सिर्फ अपनी सोच को बदलने की तथा हिन्दी का प्रयोग करने में गर्व महसूस करने की आवश्यकता है । सद्भावना पत्रिका के माध्यम से हम संकल्प लें कि आज से हम अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में ही करेंगे । सद्भावना परिवार को मेरी शुभकामनाएं ।

आर. दुरैस्वामी
प्रबंध निदेशक

कर्म की ध्वनि शब्दों से ऊची होती है। **कहावत**

कार्यकारी निदेशक महोदय का संदेश

साथियों,

केंद्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के इस नवीनत्तम अंक द्वारा आपसे संवाद स्थापित करने का यह मेरा प्रथम अवसर है । साथियों हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति की जडे सदियों पुरानी है । सच तो यह है कि यह कोई एक संस्कृति न होकर विविध संस्कृतियों का मेल है और इन अनेक संस्कृतियों की अपनी अनेक भाषाए व उपभाषाए अर्थात बोलियां है । इन सभी भाषाओं व उपभाषाओं को माला के रुप में एक साथ पिरोने का श्रेय राजभाषा हिंदी को जाता है । हिंदी हमारे देश की सबसे बडी संपर्क भाषा है क्योकि यह देश की अधिकांश जनता द्वारा पारस्परिक व्यवहार में प्रयोग की जाती है ।

भाषा का मुख्य उद्देश्य अपनी बात को सीधे सहज तथा सरल तरीके से व्यक्त करना ताकि सुनने वाला व पढने वाला इसे वैसा ही समझे जैसा हम चाहते है । इसलिए शब्दों व शैली के लिए अटकना नही चाहिए । सरल व सह्ज हिंदी को बोलचाल व कार्यालयीन कामकाज की भाषा के रुप में अपनाना है ।

साथियों हमें गृह मंत्रालय, भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम 2023-24 के सभी मदों का प्रभावी कार्यान्वयन कराना है। इस वार्षिक कार्यक्रम के साथ ही राजभाषा नियम एवं अधिनियम की शत प्रतिशत अनुपालना करना भी हम सभी का संवैधानिक दायित्व है । इनकी अनुपालना तथा दिए गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक है कि हम "हिंदी ई-फीप" का अधिकाधिक उपयोग करे साथ ही सभी विंडोज व लिनक्स कम्प्यूटर पर जो हिंदी टंकण व मुद्रण सुविधा उपलब्ध कराई गई है, उसका प्रयोग कर अपने हिंदी पत्राचार व हिंदी ई-मेल में बढोतरी करें ।

निगम, उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु सदैव प्रयासरत है । वर्ष 2023 में हमारे 35 कार्यालयों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय व नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों द्वारा पुरस्कृत किया गया । मुंबई उपक्रम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए केंद्रीय कार्यालय को "तृतीय पुरस्कार" से सम्मानित किया गया यह उपलब्धि राजभाषा के प्रति आप सभी की निष्ठा की प्रतीक है।

हमें अपने सभी प्रकार के कार्यों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करना है । केंद्रीय कार्यालय राजभाषा विभाग इस दिशा में सतत प्रयासरत है । ज्ञानपीठ पोर्टल में राजभाषा संबंधी चार सबमॉड्यूल उपलब्ध कराए गए है जिसकी सहायता से कार्मिक हिन्दी का ज्ञान अर्जित कर सकते है यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है की लगभग 64 हजार कार्मिकों द्वारा राजभाषा प्रमाण पत्र प्राप्त किए है ।

आइए हम हमारी राजभाषा पत्रिका सद्भावना के माध्यम से यह संकल्प ले कि व्यवसाय की प्रगति और ग्राहक सेवा के लिए हिंदी को अपना महत्वपूर्ण स्त्रोत और माध्यम बनायेंगें।

शुभकामनाओं सहित,

सलिल विश्वनाथ
कार्यकारी निदेशक (मा.सं.वि./सं.वि.)

प्रधान संपादक की कलम से

केंद्रीय कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "सद्भावना" के माध्यम से आपसे संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है । साथियों राजभाषा पत्रिका का मुख्य उद्देश्य कार्यालय के कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढावा देने के साथ-साथ अधिकारियों /कर्मचारियों को अपनी प्रतिभाओं को अभिव्यक्त करने का सुअवसर प्रदान करना भी है। केंद्रीय कार्यालय द्वारा निगम के सभी कार्यालयों से सद्भावना हेतु रचनाएं आमंत्रित की जाती हैं एवं उन्हे पत्रिका में प्रकाशित किया जाता है । मुझे आशा है कि सदभावना पत्रिका अपने उद्देश्य में अवश्य सफल होगी ।

आज हिंदी हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की प्रतीक के रुप में प्रतिष्ठित हो चुकी है । संपूर्ण राष्ट्र में हिंदी संपर्क भाषा के रुप में अपनी पहचान बनाती जा रही है । भारत में संविधान की धारा 343(1) के अनुसार हिन्दी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया है । हिंदी में कार्य करना हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व तो है साथ ही नैतिक जिम्मेदारी भी है।

आज हिन्दी विपणन की भाषा बन चुकी है । हिन्दी का बाजा काफी व्यापक है । जो सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी बसता है । आज बड़ी-बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां इस वर्ग को लक्ष्य करके अपने उत्पादों एवं सेवाओं का प्रचार -प्रसार पूर्णरूप से हिन्दी में कर रही है । आज सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में कम्प्यूटर पर हिंदी में हर कार्य संभव है । भारत सरकार की ओर से डिजिटल इंडिया पर जोर दिया जा रहा है । इस दिशा में भारतीय जीवन बीमा निगम ने भी अपने ग्राहकों को ई सुविधा के माध्यम से अपनी पॉलिसी संबंधी जानकारी, प्रीमियम भुगतान आदि के विभिन्न विकल्प प्रदान किए है। साथ ही हम सब का यह प्रयास होना चाहिए कि निगम की बेवसाइट पर सभी जानकारी विशेषत: ग्राहकों से संबंधित जानकारी हिंदी भाषा में दी जाए इस हेतु आवश्यकता है, सकारात्मक सोच व आशावादी दृष्टीकोण की । इससे हम बेहतर ग्राहक सेवा के नए कीर्तिमान स्थापित करने के साथ ही निगम के व्यावसायिक लक्ष्यों की पूर्ति करते हुए अपने संवैधानिक दायित्वों का भी निर्वहन कर सकेंगे ।

सद्भावना पत्रिका अपने इस उद्देश्य में सफल हो इन्ही शुभकामनाओं के साथ ।

राजेश मिढ़ा
(मा.सं.वि./सं.वि.)

संपादकीय

राजभाषा गृह पत्रिका "सद्भावना" का नवीन अंक समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पत्रिका का प्रकाशन आप सभी के सहयोग से सफल हुआ है । अत: मै सर्वप्रथम पत्रिका के प्रकाशन हेतु सामग्री उपलब्ध कराने वाले उन सभी सह्कर्मियों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूं । पत्रिका की सफलता उसके रचनाकारों की रचनाओं पर निर्भर करती है क्योकि पत्रिका रचनाकारों का प्रतिबिम्ब होती है।

हिंदी हमारी सभ्यता और संस्कृति की प्रतीक है । यह एक सरल सुबोध एवं बोधगम्य भाषा है।हिंदी के द्वारा हम अपनी बात आसानी से जन जन तक पहुंचा सकते है। हिंदी हमारी राजभाषा है और राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक व नैतिक दायित्व है। राजभाषा के प्रति हमारा कर्तव्य है कि हम अपना समस्त दैनिक कार्यालयीन कार्य एवं पत्राचार हिंदी में करें। ऐसा करने से हम न केवल अपने संवाद को सरल एवं सुगम बना सकेंगें अपितु अपने संस्थान को और अधिक ऊंचाइयों तक ले जाने में सफल हो सकेंगें।

आधुनिक युग कम्पयूटर एवं मोबाइल का युग है तथा सूचना प्रोद्योगिकी ने विभिन्न साफ्ट्वोयर के माध्यम से कम्प्यूटर एवं मोबाइल द्वारा हिंदी में लिखना एवं संप्रेषण करना अत्यंत सरल एवं आसान बना दिया है। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि आपके द्वारा कार्यालय में लिखे व भेजे जाने वाले ईमेल, पत्र-लेखन आदि केवल हिंदी में ही करें तथा ई-फीप में भी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने का प्रयास करें । ऐसा करके हिंदी के क्षेत्र में हम निगम को और अधिक ऊंचाइयों पर ले जाने में सहायक सिद्ध होंगें ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले समय में हम सभी के प्रयासों के द्वारा हिंदी न केवल भारत वर्ष में अपितु विश्व पटल पर सुदृढ स्थिति में परिलक्षित होगी।

धन्यवाद व अभिवादन सहित,

इंद्रप्रीत गुलाटी
सहायक सचिव (राजभाषा)

आजादी के 75 वर्ष

रियासतों के विलय से 5 वी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का गौरव

मेरे ख्याल से आजादी से बड़ी कोई सुविधा नहीं होती। पराधीन राष्ट्र खूंटे पर बंधे उस जानवर के समान होता है जो चाहकर भी अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता। आजाद होने पर वही राष्ट्र कहां से कहां तक पहुंच सकता है इसकी मिसाल भारत के पिछले 75 सालों के गौरवशाली इतिहास से समझा जा सकता है। जिस राष्ट्र के बारे में अंग्रेजों द्वारा आजादी के समय यह कहा गया था कि यह राष्ट्र बिखर जाएगा, वह आज परमाणु ताकत से लैस होने के साथ विश्व की 5 वी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है।

आजाद भारत ने यह साबित किया है कि लाख कमियों के बाद भी एक राष्ट्र अपने दृढ़ निश्चय से विश्व गुरू बन सकता है।

कश्मीर समेत 500 से ज्यादा रियासतों का विलय

ब्रिटिश सरकार ने इंडियन इंडिपेंडेंस एक्ट 1947 के तहत 560 से ज्यादा रियासतों को आजादी दी थी। भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी इन रियासतों के विलय की। यह काम देश के पहले गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने सभी रियासतों से बात कर उन्हें भारत में शामिल होने के लिए मनाया। 15 अगस्त 1947 तक हैदराबाद, कश्मीर और जूनागड़ को छोड़कर 560 रियासतें भारत संघ में शामिल हो गईं। यह भारतीय इतिहास की एक बड़ी उपलब्धि थी।

वोट का अधिकार

भारत ने 15 अगस्त 1947 यानी आजादी के पहले ही दिन से प्रत्येक वयस्क को मतदान का अधिकार दिया। आजादी के समय मतदान की उम्र 21 साल थी। बाद में 20 दिसंबर, 1988 को मतदान की उम्र 21 से घटाकर 18 साल करने के लिए संसद में कानून को मंजूरी दी गई।

हरित क्रांति को औपचारिक तौर पर अपनाया गया

स्वतंत्रता के बाद भारत खाद्यान्न आयात करता था। देश 1960 के दशक के मध्य तक अंर्तराष्ट्रीय खाद्य सहायता पर निर्भर था। इस समय देश में अकाल जैसी स्थिति भी थी। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) के गेहूं कार्यक्रम से जुड़े तत्कालीन सदस्य एमएस स्वामीनाथन ने 1966 में मैक्सिको के बीजों को पंजाब की घरेलू किस्मों के साथ मिलाकर उच्च उत्पादकता वाले गेहूं के बीज विकसित किए। इससे पहली बार देश में गेहूं की बंपर फसल हुई। इस तरह औपचारिक तौर पर भारत में हरित क्रांति को अपनाया गया।

महत्व - देश के खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि होने लगी। 1968 में किसानों ने रिकॉर्ड 170 लाख टन गेहूं का उत्पादन किया, जबकि इससे पहले सबसे ज्यादा 120 लाख टन उत्पादन 1964 में हुआ था। देश खाद्यान्न उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर बना और यहां तक कि विभिन्न खाद्यान्नों का निर्यात भी करने लगा। इससे कृषि क्षेत्र में जरूरी सुधार प्रक्रिया भी शुरू हो गई।

श्वेत क्रांति

भारत ने दुनिया के सबसे बड़े डेयरी विकास कार्यक्रम के कारण श्वेत क्रांति देखी। इसकी शुरूआत 13 जनवरी 1970 से हुई। डॉ वर्गीज कुरियन को श्वेत क्रांति का जनक कहा जाता है।

वर्गीज कुरियन 1949 में कैरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ लिमिटेड का काम देख रहे थे। उनके नेतृत्व में यह को-ऑपरेटिव सोसायटी खूब प्रगति करने लगी। यहां गांव-गांव से इतना दूध इकट्ठा होने लगा कि उसे उपभोक्ताओं तक पहुंचाना मुश्किल हो गया। जमा किया हुआ दूध खराब न हो जाए, इसके लिए मिल्क प्रोसेसिंग प्लांट लगाने का फैसला हुआ। इस तरह अमूल की नींव पड़ी। सरकार ने राष्ट्रीय दुग्ध विकास बोर्ड का गठन कर डॉ. कुरियन को बोर्ड का अध्यक्ष बनाया। इस तरह 1970 के दशक में श्वेत क्रांति शुरू हुई। इसकी आधारशिला ग्राम दुग्ध उत्पादकों की सहकारी समितियां हैं।

महत्व- श्वेत क्रांति से भारत दूध की कमी वाले देश से दुनिया के सबसे बड़े दूध उत्पादक देश में बदल गया। अभी दूध के वैश्विक उत्पाद में भारत का 18 प्रतिशत योगदान है।

पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण

18 मई 1974

राजस्थान के जैसलमेर से करीब 140 किमी. दूर पोखरण में 18 मई 1974 को एक सफल शांतिपूर्ण परमाणु परीक्षण हुआ, जिसने दुनिया

सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रुप से शुद्ध किया हुआ हो। **शंकराचार्य**

को हैरत में डाल दिया। उस दिन बुद्ध पूर्णिमा का दिन था। भारत ने अपने पहले परमाणु परीक्षण का कोडनेम "स्माइलिंग बुद्धा" रखा था। जिसका संदेश दुनिया के लिए यह था कि भारत ने अपनी शांति के लिए यह परीक्षण किया है।

तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इसकी नींव 1967 में रख दी थी। उन्होंने इस गुप्त मिशन को पूरा करने के लिए परीक्षण की जिम्मेदारी भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर के तत्कालीन अध्यक्ष राजा रमन्ना को सौंपी थी। उस समय डॉक्टर एपीजे अब्दुल कलाम भी उनके साथ थे। बाद में कलाम ने पोखरण-2 की पूरी कमान संभाली थी। वैज्ञानिकों और इंजीरियरों की टीम चुपचाप सात सालों तक इस मिशन के लिए कड़ी मेहनत करती रही।

महत्व - यह परीक्षण भारत को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बनाने की दिशा में पहला कदम बना। इससे भारत को अपने परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम में तेजी लाने में मदद मिली। इसके साथ भारत पांच परमाणु शक्ति संपन्न देशों की सूची में शामिल हो गया।

पहला भारतीय उपग्रह लॉन्च

19 अप्रैल 1975

क्या-पहले स्वदेशी अंतरिक्ष उपग्रह का नाम खगोलशास्त्री आर्यभट्ट के नाम पर रख गया था। आर्यभट्ट उपग्रह को इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइजेशन (इसरो) ने सोवियत यूनियन की मदद से बनाया था। इसे सोवियत संघ से लॉन्च किया गया था।

कैसे- आर्यभट्ट को बनाने में इसरो में पूर्व प्रमुख और अंतर्राष्ट्रीय स्तर से अंतरिक्ष वैज्ञानिक प्रोफेसर यूआर राव का बड़ा योगदान माना जाता है। प्रक्षेपण की तकनीक भारत के पास नहीं थी इसलिए सरकार ने सोवियत संघ से मदद मांगी। इसरों के पूर्व चेयरमैन यूआर राव ने एक इंटरव्यू में यह बताया था कि मिशन के दौरान सेंटर में जगह की कमी पड़ गई तो वैज्ञानिकों टॉयलेट को ही डाटा रिसीविंग सेंटर के तौर पर इस्तेमाल किया।

महत्व - इसके साथ ही देश ने एक नया मुकाम हासिल किया और अंतरिक्ष युग में प्रवेश किया। एक्स-रे, खगोल विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान और सौर भौतिकी में जानकारी हासिल करने के लिए वैज्ञानिकों ने इसका प्रयोग किया था।

पोखरण-2 में परमाणु परीक्षण

11-13 मई 1998

"ऑपरेशन शक्ति" कोडनेम के तहत राजस्थान के पोखरण में पांच परमाणु बमों का परीक्षण किया गया।

अमेरिका समेत कई देश नहीं चाहते थे कि भारत परमाणु परीक्षण करे। अमेरिका की खुफिया एजेंसी सीआईए को इस बात की खबर लग गई थी कि भारत ऐसा कोई परीक्षण कर सकता है। सीआईए ने चार खरब रूपये खर्च कर पोखरण की निगरानी के लिए चार सैटेलाइट लगाए, लेकिन एपीजे कलाम की अगुवाई में जुटी टीम ने सीआईए और दुनिया को चकमा देने हुए यह परीक्षण पूरा कर लिया। इस परीक्षण का श्रेय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नांडिस और पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम को दिया जाता है। कलाम उस समय रक्षा मंत्रालय में सलाहकार वैज्ञानिक के पद पर थे।

महत्व - यह तारीख इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गई। इसने भारत को एक पूर्ण परमाणु राष्ट्र बना दिया। इस परीक्षण से भारत की दुनिया भर में धाक जम गई।

हमें 75 साल की उपलब्धियों से प्रेरणा एवं गलतियों से सीख लेकर, अगले 25 वर्ष में प्रधानमंत्री के "एक विकसित राष्ट्र" एवं "राष्ट्र गुरू" बनने के सपने को पूरा करने के लिए उनके द्वारा सुझाए हुये पांच प्रण लेने चाहिए और कर्तव्यनिष्ठा से इसका पालन करना चाहिए।

- अधिक दृढ़ विश्वास और विकसित भारत के दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ें।
- गुलामी के किसी भी लक्षण से छुटकारा पाएं।
- भारत के इतिहास पर गर्व करें
- एकता की शक्ति
- नागरिकों के कर्तव्य

अर्पित यादव
बैंकेश्योरेंस एवं वैकल्पिक माध्यम
केन्द्रीय कार्यालय

विपणन में भाषा का महत्व

विश्व की प्राचीन और सरल भाषाओं की सूची में हिन्दी को अग्रिम स्थान मिला है। हिन्दी भारत की मूल भाषा है। यह भाषा हमारी संस्कृति और संस्कारों की पहचान है। हिन्दी भाषा हमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान और गौरव प्रदान करवाती है। विश्व की सबसे ज्यादा बोले जाने वाली भाषा में हिन्दी का स्थान दूसरा आता है।

भारत देश में यह भाषा सबसे ज्यादा बोली जाती है इसलिए हिन्दी भाषा को 14 सितम्बर, 1949 के दिन अधिकारिक रूप से राजभाषा का दर्जा दिया गया। जो यह साबित करता है कि भारत देश में हिन्दी का कितना महत्व है।

हिन्दी भाषा का महत्व

यह एक ऐसी भाषा है, जो सभी धर्मों के लोगों को जोड़े रखने का काम करती है। यह सिर्फ एक भाषा का काम ही नहीं करती, यह एक देश की संस्कृति, वेशभूषा, रहन-सहन, पहचान आादि है। हमारे में से कई लोग ऐसे भी हैं, जो यह मानते हैं कि वह हिन्दी सीखेंगे फिर भी उनका काम बन जायेगा, लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि भारत में हर व्यक्ति अन्य भाषाओं को मुख्य भाषा के रूप में प्रयोग में नहीं ला सकता है। लेकिन हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसकी मदद से हर भारतीय आसानी से आपस में समझ सकते हैं ।

हिन्दी एक भावनात्मक भाषा

भारत एक ग्रामीण देश है और इसकी अधिकतर जनसंख्या ग्रामीण इलाकों से ताल्लुक रखती है। भारत में सभी अंग्रेजी नहीं जानते हैं, इसलिए भारत में आपको किसी से भी बात करनी हो या फिर संवाद करना हो तो आपको पहले हिन्दी का ज्ञान होना ही चाहिए। यह एक ऐसी भाषा है, जिसकी मदद से हम अपनी भावनाओं को बहुत ही सरल तरीके से व्यक्त कर सकते हैं।

हमारे देश में ऐसे बहुत से लोग है, जिनको हिन्दी की जानकारी होते हुए भी अन्य भाषाओं को प्रयोग करते हैं क्योंकि उनको लगता है कि हिन्दी बोलने से उनके चरित्र पर सवाल उठेंगे। ये सोच रखने वाले हिन्दी को अधिक महत्व नहीं देते लेकिन उनको यह जानकारी होनी चाहिए कि हिन्दी एक ऐसी भाषा है जिसे सीखने के लिए लोग लाखो रूपये खर्च करके भारत आते हैं। हिन्दी के महत्व को जानने के लिए यही मात्र काफी है।

इंटरनेट युग में हिन्दी

इंटरनेट एक ऐसी जगह है, जहां पर हम हर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत और विश्व में इंटरनेट जिस रफ्तार से विकसित हुआ है, वो सही में बहुत तारीफ के काबिल है। हिन्दी भाषा भी अब इंटरनेट पर तेजी से अपना कब्जा जमा रही है आज के समय में हिन्दी भाषा हर समाचार पत्र से लेकर हिन्दी ब्लॉग तक अपनी पहचान हासिल कर रही है।

गूगल और विकिपीडिया जैसी बड़ी वेबसाइट हिन्दी को हर व्यक्ति तक पहुंचाने में अपनी हर संभव कोशिश कर रही है। इन्होंने हिन्दी भाषा के महत्व को समझते हुए इंटरनेट पर ट्रांसलेटर, सर्च, सोफ्टवेयर आदि को विकसित किया जिससे लोगों के लिए हिन्दी को जानना और भी आसान हो गया।

आज के समय में इंटरनेट पर हर महत्वपूर्ण चीज की जानकारी हिन्दी में मिल रही है, जिससे हिन्दी और भी लोकप्रिय होती जा रही है। हर कोने में हिन्दी की पहचान कायम हो रही है।

हिन्दी भाषा के क्षेत्र

ऐसा माना जाता था कि हिन्दी उत्तर भारत में ज्यादा बोली जाती है लेकिन अब हिन्दी भारत के हर कोने में फैल गई है और धीरे-धीरे पूरे भारत में लोकप्रिय होती गई। आज के समय में हिन्दी भाषा वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। इसकी हर जगह पर सराहना हो रही है।

आज के समय में हिन्दी मुख्य रूप से भारत के सभी राज्यों में बोली जाती है, इन राज्यों में मुख्य रूप से बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान आदि आते हैं।

यह भाषा भारत के अलावा नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, अमेरिका, यमन, युगांडा, जर्मनी, न्यूजीलैंड, सिंगापुर आदि में भी बोलने वालों की संख्या लाखों में है। इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया, यूके, कनाडा और यूएई में भी हिन्दी बोलने वाले और द्विभाषी या त्रिभाषी बोलने वालों की संख्या भी बहुत है ।

हिन्दी भाषा की विशेषताएं

- इस भाषा को देवभाषा संस्कृत का सरलतम रूप कहा जा सकता है। इसकी लिपि देवनागरी लिपि है।
- हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है जिसमें हम दूसरी भाषा के शब्द भी आसानी से प्रयोग कर सकते है, जिससे हमें असानी होती है।
- इस भाषा के वर्गमाला में स्वर और व्यंजन दूसरी भाषाओं की वर्गमालाओं की तुलना में बहुत अधिक व्यवस्थित है।
- हिन्दी भाषा के वर्ण हम जो भी बोलते हैं, उन्हें आसानी से लिख भी सकते हैं जबकि दूसरी भाषाओं में ऐसा नहीं होता है।
- यह एक ऐसी भाषा है, जिसमें निर्जीव वस्तुओं के लिए लिंग का निर्धारण होता है।
- हिन्दी भाषा को पढ़ने के साथ ही इसे आसानी से लिखा भी जा सकता है।
- हिन्दी के शब्दकोश में मौजूद शब्द हर काम के लिए अलग अलग हैं और ये शब्द बढ़ ही रहे हैं।
- सोशल मीडिया पर हिन्दी का प्रयोग हमेशा बढ़ता ही जा रहा है इसलिए सभी बड़ी-बड़ी सोशल मीडिया वेबसाइट ने हिन्दीं को महत्व देना शुरू कर दिया है।

विपणन एक आर्थिक क्रिया है। यह लाभ के लिए की जाती है लेकिन इसके साथ यह एक सामाजिक क्रिया भी है क्योंकि यह कार्य समाज के भीतर रहकर एवं समाज के लिए ही किया जाता है। अत: विपणन एक सामाजिक आर्थिक क्रिया है।

उपभोक्ता लाभ विपणन का केन्द्र बिन्दु है, अत: विपणन की सारी क्रियाएं उपभोक्ता की आवश्यकता, रूचि, फैशन आदि को ध्यान में रखकर ही की जाती है इसलिए विपणन को उपभोक्ता प्रधान प्रक्रिया कहा गया है। विपणन का प्रारंभ उपभोक्ता की इच्छा एवं आवश्यकता की जानकारी से होता है तथा उपभोक्ता की इच्छा एवं आवश्यकता की संतुष्टि के साथ विपणन क्रिया सम्पन्न हो जाती है।

चाहे आप किसी भी धर्म या संस्कृति को मानने वाले हो, किसी भी देश या काल में निवास कर रहे हो बिना विपणन के आपका कार्य नहीं चलेगा क्योंकि विपणन कार्य सर्वत्र किया जाता है। यहां तक कि बिना विपणन के संपूर्ण समाज और सभ्याताओं के कार्य अधूरे रह जायेगें। अत: यह कहा जा सकता है कि विपणन एक सार्वभौमिक क्रिया है।

विपणन कार्य उपभोक्त से प्रारंभ होता है तथा उपभोक्ता की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के पश्चात समाप्त होता है। सूचनाओं को एकत्रित करना तथा विश्लेपषण करना, ग्राहक क्या खरीदना चाहता है? कब खरीदना चाहता है, कितनी मात्रा में कहां खरीदना चाहता है। इस हेतु बाजार अनुसंधान एवं विपणन अनुसंधान के कार्य करके यह पता लगाने की कोशिश की जाती है कि ग्राहक किस प्रकार का उत्पाद पसंद करेंगे।

इस कार्य में उत्पादन के रंग, रूप, आकार, डिझायन, किस्म, पैकेजिंग, लेवलिंग आदि पर ध्यान दिया जाता है, ताकि उत्पादन उपभोक्ता की आवश्यकता एवं पसंद पर खरा उतर सके।

इस कार्य में विपणनकर्ता माल ग्राहकों को हस्तान्तरित करता है इसके लिए मूल्य-सूचियां बनाना, विक्रय शर्तें निर्धारित करना, विक्रय-कर्ताओं की नियुक्ति तथा मध्यस्थों की नियुक्ति जैसे कार्य आवश्यक हो जाते हैं। सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए प्रभावी विपणन व्यवस्था उपभोक्ता एवं व्यवसायी के मध्य सूचनाओं के आदान-प्रदान का महत्वपूर्ण साधन है। विपणन अनुसंधान, विज्ञापन, प्रचार आदि साधनों से सूचनाओं का आदान प्रदान होता है। अत: यह कहा जा सकता है कि विपणन सूचनाओं के आदान-प्रदान में सहायक है।

विपणनकर्ता इसके लिए हिन्दी भाषा का उपयोग करके विज्ञापन, प्रचार एंव प्रसार, विक्रयकर्ता, विपणन अनुसंधान आदि साधनों का सहारा ले सकता है एवं अपने वर्तमान एवं भावी ग्राहकों के साथ संपर्क स्थापित करता है तो अपना संदेश ग्राहकों को पहुंचाने के साथ ही ग्राहकों की शिकायत एवं सुझावों की भी जानकारी ले सकता है।

अधिकाधिक लाभ कमाने के लिए प्रभावी विपणन से माल की मांग बढ़ती है तथा मांग बढ़ने से व्यावसायी के लाभ में वृद्धि होती है। अत: अधिकाधिक लाभ कमाने के लिए विपणन जन-जन कि भाषा हिन्दी में करें तो खुद को पूरे देश से जोड़ सकता है।

बाजार अनुसंधान के माध्यम से बदलती हुई परिस्थितियों में उपभोक्ता के व्यवहार का अध्ययन किया जाता है तथा उपभोक्ता की आवश्यकता एवं पसंद का पता लगाया जाता है तथा उपभोक्ता की आवश्यकता एवं पसंद के अनुरूप नवीन उत्पादों का निर्माण किया जाता है। अत: विपणन में हिन्दी भाषा का उपयोग ही नवीन उत्पादों का जनक है।

अनुजा धुरी
कार्यालय सेवा विभाग
केंद्रीय कार्यालय

एक विचार

"जीत का मतलब हमेशा प्रथम आना ही नहीं होता,
बल्कि जीत का मतलब है कि आपने पहले से बेहतर किया।"

यह मुहावरा पढ़ने के लिए बहुत उत्साहजनक था, लेकिन यह किस हद तक सच है, हमें इसके बारे में सोचना होगा। इस मुहावरे ने मुझे विश्लेषण करने के लिए प्रेरित किया ।

हम हमेशा अपने बच्चों को सिखाते हैं कि हमें हर जगह पहले आना है, यहाँ तक कि हमारे माता-पिता ने भी यही उपदेश दिया । मगर हमने महसूस किया कि हमें हमेशा प्रथम स्थान पर रहने की आवश्यकता नहीं है । हम हमेशा खुद से प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं और बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। खुद से प्रतिस्पर्धा, हमें और बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करेगी । इससे मुझे संतुष्टि मिलेगी कि मैं बेहतर से बेहतर कर पा रही हूं और यह विचार मुझे प्रेरित करता रहेगा ।

हमें अच्छा करने के लिए संघर्ष और प्रयास करना होगा । सफलता का रहस्य समर्पण के साथ कार्य करने में निहित है । हो सकता है कि आप सर्वश्रेष्ठ न हों, लेकिन निश्चित रूप से आपकी उपलब्धि स्वयं को बेहतर बनाने के लिए आपके द्वारा किए गए प्रयासों के बारे में बताती है । स्वयं पर विजय प्राप्त करना ही सर्वोत्तम विजय है ।

यह सुंदर शब्द मैंने कहीं पढ़े थे -

"अपने प्रदर्शन को पूरा करने के लिए अपनी अपेक्षाओं को कम न करें। अपनी उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए अपना स्तर बढ़ाएं । अपने आप से सर्वश्रेष्ठ की अपेक्षा करें और फिर वह करें जो इसे वास्तविकता बनाने के लिए आवश्यक है।"

संक्षेप में दूसरों से नहीं बल्कि स्वयं से प्रतिस्पर्धा करें और विजेता के रूप में उभरें, यही जीवन का यथार्थ है

अंकिता राणे
उप सचिव
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (सॉ.सं.)
केंद्रीय कार्यालय

मीठी वाणी

खुश हो जाएगा, जगत का हर प्राणी,
सुन लो प्यारे मेंरे, बस बोलो मीठी वाणी।
मिथ्या जग में, कोई आणी है ना जाणी,
याद रह जाएगी बस अपनी मीठी वाणी।।

ऋत बसंत, कोयल के कूक,
खुश हो के नाचे मन का मोर।
पपीहे की पीहू पीहू,
आज हुआ मनवा चितचोर।।

छाई घटा घनघोर,
बोले चकवा चकोर।
पवन लगी करने ये शोर,
लागी कलेजे की कोर।।

जग जाए बदन का हर पोर,
आई अब तो सुहानी भोर।
फैला उज्जास, भागा अंधियारा,
छाया उल्लास चहूं ओर।।

उड़े चुनरिया धानी,
राजा हो या रानी।
दादी हो या नानी,
बोलो मीठी वाणी।।

सोच विचार सब छानी,
इसका नहीं कोई सानी।
अब मैंने तो है ये ठानी,
बोलो मीठी वाणी।।

प्यार से बोले जो भी,
वो ही सबसे बड़ा दानी।
किसी ने खींची, किसी ने तानी,
अगर तुमने ठीक नहीं बोली वाणी।।

एक ने कही दूजे ने मानी,
गुरू नानक कहे दोनू ग्यानी।
बात बात में फिसली जबानी,
हो जाए भूल तो फिर पानी पानी।।

हो जाए एहसास तो अच्छा भानी,
सोरी बोलकर मुस्काती बानी।
हर बात का मलतब ना निकालो यानी,
सीधे दिल से निकले वो ही मीठी वाणी।।

मिठाई ले जानी हो या लानी,
मुस्मुराहट का ना कोई सानी।
मेमसाहब गौरी हो या बिटिया सयानी,
लगे प्यारी जो बतियाये मीठी वाणी।।

लाभ ही लाभ है,
नहीं कोई हानि।
मेरा है अनुरोध आपसे,
बोलो हरदम मीठी वाणी।।

भंवर लाल सुथार
संकाय सदस्य
प्रबंध विकास केन्द्र

गुस्सा मूर्खता से आरंभ होता है और पश्चाताप पर समाप्त होता है। **पाइथागोरस**

सेवा विश्वास के 66 वर्ष

1 सितंबर, 2022 को अपनी मातृसंस्था भारतीय जीवन बीमा निगम ने अपनी गौरव और विश्वास के 66 वर्ष पूर्ण किये इस विशेष दिवस की निगम के सारे कर्मचारी, अभिकर्ता एवं बीमाधारकों को हार्दिक शुभकामनाएं।

1 सितंबर, 1956 को शुरू हुआ ये सफर निरंतर चला आ रहा है इन 66 वर्षों में हमारे निगम ने न केवल करोड़ों बीमाधारकों का जीवन सुरक्षित किया किन्तु देश के अनेक उपक्रमों में अपना योगदान देकर देश की उन्नति में अपनी जिम्मेदारी को बखुबी निभाया है। 249 निजी कंपनियों के राष्ट्रीयकरण के बाद हमारे भारतीय जीवन बीमा निगम की स्थापना हुई और गत 66 वर्षों में निगम ने अपने कार्यकाल में अपने से संबंधित सभी क्षेत्रों में प्रगति की है। आज निगम 113 मंडल कार्यालय, 2048 शाखा कार्यालय, 1564 सैटैलाईट कार्यालय के माध्यम से कश्मीर से कन्याकुमारी तक के सारे देशवासियों की बीमा सुरक्षा की जिम्मेदारी निभा रहा है।

मैं निगम को पानी की तरह मानता हूं, पानी को जीवन कहते हैं निगम ने 1956 से लेकर आजतक और आगे न जाने कितने साल अपने कर्मचारियों को एक खुशहाल जीवन दिया है और भविष्य में भी देगा। पानी प्रवाही होता है - हमारा निगम भी पिछले 66 सालों से प्रवाही है पानी का अपना रंग आकार नहीं होता, पानी को जिस चीज में मिलाओ उस रंग का हो जाता है, जिस वस्तु में डाल दो उस वस्तु का आकार धारण कर लेता है। हमारे निगम का भी कुछ ऐसा ही है। 1956 से लेकर सन् 2000 तक जीवन बीमा क्षेत्र में भारतीय जीवन बीमा निगम का एकाधिकार था। इस कार्यकाल में देश के शहरों से लेकर देहातों तक और समाज के सारे तबकों के लिए निगम कार्यरत् रहा। एकाधिकारी होते हुए भी निगम ने कभी अपने बीमाधारकों को लूटने की कोशिश नहीं की नही अपने संप्रभुता का अहंकार जताया। निगम की इसी भूमिका के कारण निगम जनमान्य हुआ और जीवन बीमा का दूसरा नाम एल आई सी हुआ।

सन् 2000 में बीमा क्षेत्र निजी कंपनियों के लिए खुला तब कई लोगों ने निगम की क्षमता पर आशंका जताई। इस आशंका के पीछे टेलिकॉम क्षेत्र का अनुभव एंव एम.टी.एन.एल. के पिछड़ने का इतिहास था किन्तु निगम ने पानी स्वरूप अपने आपको बदलती स्थितिनुसार बदला और निष्ठा के साथ अपने कर्तव्य में जुड़ा रहा इसके परिणाम स्वरूप निजीक्षेत्र के खुलने के 22 वर्ष बाद भी भारतीय जीवन बीमा निगम कुल व्यवसाय का $^{3}/_{4}$ हिस्सा अपने नाम रखता है और प्रतिस्पर्धी 23 कंपनियां मिलकर $^{1}/_{4}$ हिस्से में सिमट गयी है।

निगम ने देश की हर पंचवार्षिक योजना में अपना आर्थिक योगदान दिया है। केन्द्र सरकार के निर्णय के अनुसार 17.05.2022 से भारतीय जीवन बीमा निगम एक लिस्टेड कंपनी बन गयी है और उसका आईपीओ बाजार में आया तो फिर एक बार कुछ लोगों के मन में आशंका जागी अब निगम पर विपरीत परिणाम होगा परंतु पुन: एक बार निगम इन आशंकाओं को झुठला देगा। निगम के वरिष्ठ अधिकारियों ने एल आय सी 3.0 की घोषणा की और निगम के सभी कर्मचारियों ने आनेवाले बदलाव को मानसिक रूप से स्वीकार किया है। बीमाधारक तो पहले से निगम के साथ थे और आगे भी रहेंगे। कहते हैं जो व्यक्ति अमृत पीता है वह अमर हो जाता है तो जो संस्था करोड़ों लोगों के जीवन में बीमा के रूप में अमृत बांट रही है उसके भविष्य को भला क्या खतरा हो सकता है। हमारा निगम तो निरंतर चलता रहेगा हमारी जिन्दगी के साथ भी और हमारी जिन्दगी के बाद भी।

भावेश करकटे
ग्राहक संबंध प्रबंधन विभाग
केंद्रीय कार्यालय

फिर नया जन्म मिला है मुझे...

निराशा के अंधकार में मैं लडखडाता, ठोकरे खाता घूम रहा था। जीवन के कोई भी गतिविधि में मुझे कोई रुची नही थी। इस तरह जिंदगी का मजा ही खत्म हो गया था। लिखते लिखते आर्थर ने गहरी सांस ली। मानो चलचित्र की तरह उसकी निराशावस्था की घटनाएं उसके नजरों के सामने से सरकने लगी। आर्थर आखिरी उपाय समझकर डॉक्टर के पास गया। अपनी निराशाग्रस्त मनोवस्था के बारे में उन्हें सब स्थिती बताई। डॉक्टर ने सबसे पहले आर्थर की संपूर्ण शारीरिक जांच करवाई। हर तरह के परीक्षण करवाये।

परिणाम में पता चला की शारीरिक रुप से आर्थर एकदम तंदुरुस्त है।

थोडी देर तक डॉक्टर सोच में डूबे और आर्थर हताश होकर उनके चेहरे को ताकते हुए एक दुसरे के सामने बैठे रहे। अचानक डॉक्टर का चेहरा खिलखीला उठा।

"दोस्त," आर्थर की पीठ पर थपथपाते हुए डॉक्टर ने कहा, "मैं तुम्हारी इस अवस्था से तुम्हे बाहर लाऊंगा। तुम्हे कोई दवा की जरूरत नही है। मैं तुम्हें परिणाम की गवाही देता हूं। पर एक शर्त है। मैं जिस तरह से उपचार करुंगा तुम्हे उस का पालन करना होगा। मंजूर हो तो शुरू करते है।"

आर्थर ने तो मन में ठान ली थी की उसका इलाज नामुमकीन है। पर डॉक्टर का उत्साह देखकर वह भी उपचार करवाने के लिये सहमत हुआ।

डॉक्टर ने चार चिठ्ठीयां बनाकर, उसपर एक से चार आंकडा लिखकर आर्थर को दी।

और कहा, "घर से दूर समुंदर किनारे एकांत स्थल पर जाओ। साथ मे पानी और खाने का प्रबंध रखो न किसीं से मिलना, न किसीं से कोई बात करना, न किसीं से कोई संपर्क रखना। न कोई किताब, न कोई अखबार न कोई रेडियों, न कोई फोन लेकर जाना है। संपूर्ण एकांतवास में रहो।

यह चार चिठ्ठीयां है, इनपर समय लिखा है। उसी समय पर चिठ्ठी एक के बाद एक खोलकर चिठ्ठी में जो लिखा है, उस तरह बर्ताव करना है।"

दूसरे दिन सब इंतजाम करवा के आर्थर सुबह जल्दी ही समुंदर किनारे एकांत जगह पर नारीयल के पेडों की छांव में जाकर बैठा। चिठ्ठी पर लिखे समय के अनुसार उसने पहली चिठ्ठी खोली। उसमें लिखा था, "सुनो!"

आर्थर ने पढकर सोचा, क्या सुनू??

फिर आँखे मुंदकर बैठा और समुंदर की लहरों की आवाज सुनने लगा। शांति से सुनता रहा। तो उसे पेडों कि शाखों से बहती हवा की आवाज, समुद्र की सतह की उपर से बहते पवन की आवाज, पक्षियों की किलकिलाहट, दूर उडते पक्षियों की किलकारियां सुनाई देने लगी।

वह मुग्ध होकर सुनता रहा।

आर्थर को लगा की मैं भी इसी प्रकृती का एक हिस्सा हूं। मेरा अस्तित्व भूलकर मैं प्रकृती में समा रहा हूं। आर्थर को प्रगाढ शांति का अहसास होने लगा। मनके अंदर की अशांति नष्ट हुई।

दूसरी चिठ्ठी खोलने का वक्त आया।

आर्थरने दुसरी चिठ्ठी खोली। उसमें लिखा था, "पीछे मुडकर देखो!"

पहले तो कुछ समझ में नही आया। लेकिन धीमे धीमे वह भूतकाल में घटी घटनाओं पर सोचने लगा।

उसे अपना बचपन याद आया। माँ बाप का प्यार, रिश्तेदारों का अपनापन, बचपन के दोस्तों का प्यार, वो स्कूल के दिन! बचपन के वो सुनहरे दिन मानो उसने फिर से जी लिये।

आज जो लोग उससे दूर हो गये है लेकिन किसी समय उन्होंने जो प्यार दिया था वो याद करके उसे खुशी मिली।

बचपन के वो अबोध और सहज सीधेसादे दिन निकल गये। अब हम सब कितने कृत्रिम, दिखाऊ हो गये है यह सोचते सोचते आर्थर ने तीसरी चिठ्ठी खोली।

"अपने ध्येय और उद्दिष्टों की आलोचना करो!"

तीसरी चिठ्ठी में यह पढकर आर्थर ने कहा, "मैं अपने आप को बहुत बुद्धिवान समझता था। इसलिये मैने सोचा मेरे ध्येय और उद्दिष्ट को मैं क्यों फिर से जांच करू?"

लेकिन फिर भी मैं सोचने लगा।

आर्थर के ध्यान में आया की वह जिन्हे ध्येय मानता था वे सिर्फ भौतिक साधनों को, संपत्ती और सुविधाए पाने के लिये थे। उसके उद्देश यश, मान्यता और सुरक्षितता पाने के थे। उसके मन में ध्येय

और उद्देश के बारे में सुस्पष्टता नही थी। वे प्राप्त होने के बाद भी उसे शांति और समाधान नही मिल रहा था। उसने सोचा की अब मुझे आंतरिक शांति और समाधान देने वाले ध्येय सुस्पष्ट और निश्चित करने होंगे।

सोचते सोचते शाम होने को आयी। सूरज डुबने जा रहा था। समुंदर में उफान आना शुरू हुआ। ज्वार की बडी बडी लहरे किनारे पर धडकने लगी।

आखरी चिठ्ठी बची थी। वो आर्थर ने खोली। उसमें लिखा था, तुम्हारी सभी चिंता, विवंचना रेतपर लिखकर लौट आओ।

ये आसान लगा। आर्थर ने एक पतली सी लकडी लेकर रेत पर लिखना शुरू किया। जितना मन में था सब कुछ लिखता गया। सविस्तर लिखता गया। लिखकर पूरा होने के बाद वहां से उठकर लौटने लगा। ज्वार की एक महाकाय लहर किनारे पर आ धडकी। आर्थर ने मुडकर देखा, उसने लिखी हुई सब चिंता विवंचना मिट गयी थी। उनका नामोनिशान भी न रहा।

आर्थर लिखता है, यह देखकर मैं तो स्तब्ध खडा रह गया! फिर जाना की मेरे मन की विवंचना, नैराश्य संपूर्णत: मिट गया है। मन मे नया उजियाला फैला है।

मानो, जैसे मुझे फिर से नया जन्म मिल गया था !!!

मीनाक्षी विवेक आडे
स.प्र.अ. (प्रोग्रामर)
सूरत शाखा क्र.1 (861)

आजादी का अमृत - महोत्सव

ख्वाब देखे थे जो हम सबने कभी,
आजादी का तिरंगा नाज से फहरायेंगे सभी।
पूरे भारत की ख्वाहिश थी,
अपने देश की आजादी मनायेंगे हम सभी।

संतों मुनियों का ये देश हमारा है,
धरती उपजाती सोना जो कितनों का सहारा है।

आजादी के मतवालों ने शान से तिरंगा लहराया था,
न जाने कितनों ने अपने लहू से हमें आजादी दिलाया था।

भारत संप्रभुता का देश कहलाता है,
आजादी के पचहत्तर वर्ष बाद भी
अनेकता में एकता का पाठ पढ़ाता है।

वीरों और बलिदानों का यह भारत देश हमारा है,
इस धरती पर मर मिटे न जाने कितने,
जब-जब दुश्मनों ने हमें ललकारा है।

आजादी का हम सब अमृत महोत्सव मना रहे,
पूरे विश्व में अपने भारत का गौरव बढ़ा रहे।
यह महोत्सव है देश की आन, बान और शान का,
यह महोत्सव है देशभक्ति और हमारे अभिमान का।

कुमार किसलय
नव व्यवसाय एवं पुनर्बीमा विभाग
केंद्रीय कार्यालय

एल आई सी का नया रूप नया संस्करण

1 सितंबर 1956 में स्थापित एल आई सी संस्करण 1.0 है,
न थकी, न रूकी, हर पल सेवाएं देती, चल रही निरंतर है।

नियमित बचत से परिवार की आर्थिक सुरक्षा का महत्व बताती है,
सम्यक संचय और निवेशन से कितने भविष्य सुरक्षित किये हैं।

निजीकरण के बाद एल आई सी संस्करण 2.0 है,
प्रतिस्पर्धा की अग्निपरीक्षा में एल आई सी और निखर के आई है।

हर दम नए रंग, नए रूप, नयी तकनीकियां अपनायी है,
बीमाधारकों को विविध सुविधा देकर मार्केट लीडर रही है।

लिस्टिंग के बाद एल आई सी संस्करण 3.0 है,
जिसमें नया परिवेश, नया दृष्टिकोण और नया जोश है।

देश और विदेशों में नाम बनाकर प्रगतिपथ पर अग्रसर है,
एकरूप हुई बीमा से इस तरह जैसे बीमा मतलब एल आई सी ही है।

लोकहित, राष्ट्र कल्याण के ध्येय के साथ, विश्वास की नींव पर खड़ी है,
क्योंकि एल आई सी जिन्दगी के साथ भी और जिन्दगी के बाद भी है।

सुजाता पाटील
सामरिक व्यवसाय ईकाइ-
अतंर्राष्ट्रीय प्रचालन विभाग
केंद्रीय कार्यालय

दर्द को सहना

एक बार एक सज्जन बहुत दुखी थे और वे अपने गुरूजी के पास आए और उनसे प्रार्थना करने लगे कि मुझे कुछ समाधान बताएं।

तब गुरूजी ने उनसे कहा कि आप एक ग्लास पानी में मुट्ठी भर नमक डालो और वो पी जाओ।

शिष्य ने पानी पीया।

"इसका स्वाद कैसा है?" गुरूजी ने पूछा

"भयानक" शिष्य ने कहा

गुरूजी मंद-मंद मुस्कुराए और फिर ने उन सज्जन से कहा ... "फिर एक बार एक मुट्ठी नकम हाथ में लो और उसे झील में डालो।

दोनों साथ-साथ चुपचाप एक नजदीकी झील पर आए और जब शिष्य ने मुट्ठी भर नमक झील में डाला तो गुरूजी ने फिर से कहा "अब झील से पानी पीयो"

जब शिष्य के ठोड़ी से पानी टपक रहा था, तब गुरूजी से पूछा, अब इसका स्वाद कैसा लग रहा है?"

"अच्छा" शिष्य खुश होकर बोला

अब तुम्हें पानी में नमक का स्वाद आया?

शिष्य बोला "नहीं"

गुरूजी शिष्य के पास बैठे और उन्होंने कहा "जिन्दगी में तकलीफें / चुनौतियां भी नमक की तरह होती हैं, पर हम उस तकलीफ को किस पात्र में ढालते हैं उसी पर हमारा सुख या दुख निर्भर करता है

इसलिए जब भी आप दुखी हैं, अपने मन के पात्र को बड़ा बनाएं।

गिलास जितने छोटे मत बनिए, झील की तरह विशाल बनिए।

दिल की गहराई समुद्र के जितनी होती है शर्त यह है कि हम अपने मन की गहराईयों को समझें और क्षुद्र परिस्थितियों को मन की गहराईयों में डुबो दें ताकि उनका खारा स्वाद हमारे जीवन को प्रभावित न कर सके।

रीना पहलानी
सूचना का अधिकार विभाग
केंद्रीय कार्यालय

मैं बीमा हूं साहब, हर वक्त साथ निभाता हूं

छोटी छोटी बचतों को,
एक बड़ा विनियोग बनाता हूं ।
मैं बीमा हूं साहब,
हर वक्त साथ निभाता हूं ।।

तेरे सपनों को पूरा करता,
तेरे भविष्य को सुरक्षित रखता।
जीवन में आए ना कोई विपदा,
हर आवश्यकता को आरक्षित करता।।

जिन्दगी के साथ रहकर,
जीवन के बाद को सुखमय बनाता हूं।
मैं बीमा हूं साहब,
हर वक्त साथ निभाता हूं ।।

मेरा उद्देश्य कमाना नहीं है,
मेरा उद्देश्य तुम्हारी सुरक्षा है।
आज ही तुम बीमा करवाओ,
इसी में तुम्हारी रक्षा है।।

छोटे छोटे पग चलाकर,
एक बड़ी मंजिल तक पहुंचाता हूं।
मैं बीमा हूं साहब,
हर वक्त साथ निभाता हूं ।।

कभी बच्चे की फीस मैं बनता,
कभी बेटी की शादी का खर्चा।
तेरी कमी को पूरा करता,
बना के रखता तेरा चर्चा।।

कभी पेंशन, कभी इनकम,
तो कभी बूढ़े मां-बाप का सहारा बन जाता हूं।
मैं बीमा हूं साहब,
हर वक्त साथ निभाता हूं ।।

मनोज वैश्य
निवेश फ्रंट ऑफिस
केंद्रीय कार्यालय

एक औरत

बचपन गुजरा खेल कूद में, शरारतों में, नादानियों में जवानी गुजरी मीठे मीठे सपनों में, दोस्तों से गपशप में कभी किताबों से कुश्ती, कभी ख्वाबों की सहर न जिन्दगी के मायने पता, न खुद को समझने की क्षमता वक्त रेत की तरह फिसल गया, उम्र बढ़ती गई दौड़ दौड़ में पत्नी.. बहु... ननद...मां... रिश्ते निभाती गई खुद को भूलती गई, वजूद खोती गई सबसे कीमती रिश्ता "मेरा मुझसे" रसोई में कही गुम गया कुछ कर दिखाने का जूनून मैले कपड़ों के साथ रोज धुल गया मौसम बदल गये अपनों की जरूरतों की तरह न मम्मी... मम्मी का शोर... न अजी सुनते हो .. की आवाज सब दौड़ लगाने में व्यस्त हैं जिंदगी की रेस में सालों से खोई हुई "मैं" की तलाश में आईना देखा झुर्रीयों से भरा चहेरा... चमकते हुए सफेद बाल पर, सूखी आँखों के वीराने में दूर टिमटिमाती हुई अरमानों के चिराग उम्मीद की किरण फिर से जाग उठी, आशाओं की ताक़त से धीरे धीरे रोशनी बढ़ती गई, सलोनी सी मैं साफ़ दिखने लगी चेहरे पर मुस्कान, आंखों में चमक लिए मैं ने लांघी घर की चौखट गुनगुनाते हुए एक गीत "ये सफर बहुत है कठिन मगर न उदास हो मेरे हमसफर"...

सभी अद्भुत महिलाओं को समर्पित

व. वरलक्ष्मी
उ.श्रे.स
द.म.क्षे.कार्यालय, हैदराबाद

रावण जिन्दा बच निकला

रावण जिन्दा बच निकला
बस एक सवाल से
भीड़ निरूत्तर कांप गई
लंकेश के बवाल से।

दशानन ने आह्वान किया
आओ मुझे जलाओ
मुझपे चाहे जितना
तुम सब तीर चलाओ।

लेकिन प्रत्यंचा वही ताने
जो नैतिकता से राम हो
कर्मों से जो पुरूषोत्तम
रावण जैसा न काम हो।

बस थर थर कांप गयी
वहां जमा जो भीड़ थी
रावण की हत्या के खातिर
जो जमा मंडली अधीर थी।

इस सवाल का उत्तर
कोई वहां न दे पाया
राम सा कहलाने का तमगा
खड़ा कोई न ले पाया।

अंदर रावण सबके बैठा
फिर बाहर किसे जलाना है ?
आग लगाओ अपने अंदर
अगर राम तुम्हें बन जाना है।

याद रहे कि पुतले जलने से
रावण नहीं जला करते
रावण-वध के असली हकदार
रावण नहीं हुआ करते।

भीड़ का हर चेहरा
अपने अंदर झांक रहा था
रावण की तो बात थी सच्ची
हर कोई यह मान रहा था।

मरने को तैयार था रावण
पर कोई मार न पाया
रावण के इस सवाल से
कोई तीर चला न पाया।

ऐसा मंजर, इसी जगह फिर
अगली बार दिखेगा
देखें इस सवाल से
कब तक रावण बचेगा ?

रावण जिंदा बच निकला
बस एक सवाल से
भीड़ निरूत्तर कांप गई
लंकेश के बवाल से।

मयंक राजन
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग
केंद्रीय कार्यालय

राजभाषा विविध गतिविधियां

मनुष्य के कर्म ही उसके विचारों की सबसे बडी व्याख्या है। **लॉक**

राजभाषा विविध गतिविधियां

बुनियादी शिक्षा बनाम राजभाषा हिंदी

भारतीय संविधान के सत्रहवें भाग की अनुच्छेद संख्या 343 से 351 तक में राजभाषा संबंधी जो प्रावधान हो गये हैं, उनमें संघ की राजभाषा हिंदी व उसकी लिपि देवनागिरी के निर्धारण से प्रारंभ करके, केंद्र सरकार के इस भाषा के प्रसार, विकास संबंधी कर्तव्यों जैसे अनेक उपबंध शामिल हैं। भारत सरकार अपने इस संवैधानिक दायित्व के निर्वाह हेतु अनेक योजनाओं की रूपरेखा बनाती रही हैं तथा उन्हें क्रियान्वित करने के लिये पर्याप्त बजट का प्रावधान भी वृहद स्तर पर करती रही हैं। इस बजट के आधार पर हिंदी के प्रयोग-प्रचार और समृद्धि को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अनेक प्रकार की गतिविधियां संचालित की जाती हैं। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों एवं सार्वजनिक उपक्रमों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में सक्षम बनाने के लिये अनेक विभागीय परीक्षाओं व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। सभी विजेताओं को बड़े पैमाने पर नकद राशि प्रदान कर प्रोत्साहित व पुरस्कृत किये जाते हैं। हिंदी टंकण, आशुलिपि व कंप्युटर संबंधी बुनियादी शैक्षणिक प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक साल सितंबर में विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा जारी पोस्टरों एवं विभिन्न उपयोगी परिपत्रों के माध्यम से 14 सितंबर को हिंदी दिवस एवं उससे जुड़े हिंदी सप्ताह एवं पखवाड़ा के आयोजनों का निर्देश जारी किया जाता है। इसके अलावा अनेक देशों में स्थित भारतीय दूतावासों में हर वर्ष दस जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस" मनाया जाता है। सारांश यह कि इतनी सारी गतिविधियों के संचालन के बाद भी अंग्रेजों की राजभाषा अंग्रेजी के सामने अरबों भारतीयों की राजभाषा हिंदी की स्थिति आज भी सुनिश्चित नहीं है। इसे दूसरे शब्दों में कहा जाये तो यह मान लें कि अंग्रेजी भाषा को चुनौती देने में हिंदी भाषा पूरी तरह अपनी सक्षमता और सबलता प्रमाणित नहीं कर पा रही है। हमारी हिंदी भाषा केवल अनुष्ठान और अनुवाद की लोकप्रिय भाषा बनकर रह गयी है।अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी की दिनोंदिन बढ़ रही लोकप्रियता के बावजूद आज भी यह समस्त भारतीयों के लिये पूरी तरह संपर्क भाषा नहीं बन पायी है। वार्तालाप के क्रम में अंग्रेजी भाषा का उपयोग स्वाभाविकत: आवश्यक हो जाता है। दरअसल हमारे देश की युवा पीढ़ी को हिंदी की शिक्षा की गंभीरता की अनूभूति कराने में सरकारी नीति का प्रभाव और परिणाम पूरी तरह स्पष्ट रूप से नजर नहीं आता है। विशेष रूप से अहिंदी प्रदेशों में यह स्थिति और भी निराशाजनक हो जाती है। इन प्रदेशों में सरकारी और निजी स्कूलों में हिंदी शिक्षण की स्थिति महज औपचारिकता बन कर रह गयी है। एक एच्छिक विषय के रूप में हिंदी की पढ़ाई पूरी कर ली और तदनुसार अपने कर्तव्य की औपचारिक रूप से इतिश्री कर ली। यहां तक कि दसवीं और बारहवीं तक की शिक्षा में भी अन्य विषयों की तुलना में हिंदी में उत्तीर्णता का प्रतिशत अंक न्यूनतम रखा जाता है। स्वाभाविक रूप से हिंदी रोजगार की भाषा के दायरे से अलग-थलग पड़ जाती है।बुनियादी रूप से यहां से ही हिंदी की स्थिति कमजोर होने की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। हिंदी केवल बोलचाल की भाषा बनकर रह जाती है। न केवल हिंदी बल्कि उस प्रदेश की मूल भाषा भी अंग्रेजी के आगे अपना प्रभाव कायम नहीं रख पाती।इसकी वजह यह है कि हिंदी को राजभाषा के रूप में देखना हम सबकी नियति बनकर गयी है। आठवीं,दसवीं या बारहवीं कक्षा तक हिंदी पढ़ने के बाद आगे की पढ़ाई के दौरान अनेक वर्षों तक उससे औपचारिक शैक्षिक प्रयोग से पूरी तरह कटे रहनेवाले सरकारी अथवा सार्वजनिक उपक्रमों में नवनियुक्त सरकारी अधिकारियों अथवा कर्मचारियों से यह उम्मीद की जाती है कि वे राजभाषा अंग्रेजी के साथ-साथ राजभाषा हिंदी में भी सरकारी कामकाज करेंगे। वास्तव में इन अधिकारियों अथवा कर्मचारियों ने काफी वर्षों से लिखने-पढ़ने या अन्य औपचारिक कार्यों में हिंदी का उपयोग किसी भी रूप में नहीं किया है और अचानक उनसे राजभाषा हिंदी का उपयोग करते हुये किसी सरकारी पत्र का हिंदी प्रारूप तैयार करने को कहा जाये तो ऐसे कार्मिकों से इस अपेक्षा का तार्किक आधार रखना व्यर्थ है कि वे अपना समस्त कार्य तत्काल हिंदी में करने में सक्षमता अथवा निपुणता दर्शानें मे सफल हो पायेंगे। यद्यपि इसका कारण यह नहीं कि हिंदी उनकी नजर में एक कठिन भाषा के रूप में स्थापित हो रही है। बल्कि ऐसा इसलिये होता है कि उन्होंने कई वर्ष पहले हिंदी का प्रयोग केवल औपचारिकतावश अल्प अवधि के लिये ही किया था और उसके बाद उनका हिंदी से कभी कोई संपर्क ही नहीं रहा। यह सर्वविदित है कि किसी भी भाषा की इमारत अभ्यास की बुनियादी ईटों की मजबूती पर आधारित होती है। व्यक्ति किसी भाषा की जानकारी उसका लगातार इस्तेमाल करते हुये ही प्राप्त कर सकता है। सामूहिक इस्तेमाल से यह विकसित और समृद्ध होती है। कहना न होगा कि प्रयोगशीलता से वंचित भाषा की आकस्मिक मृत्यु स्वाभाविक रूप से निश्चित है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि सामान्य बोलचाल और सामाजिकता

की दृष्टि एवं अन्य भारतीय भाषाओं से अलग विशिष्ट हिंदी अपनी व्यापकता और विशेषता के कारण अनौपचारिक रूप से 'राष्ट्रभाषा' के पद की सर्वथा योग्य उत्तराधिकारिणी है। आवश्यकता इस बात की है कि इसे औपचारिक रूप से राष्ट्रभाषा बनाने के लिये कुछ बुनियादी कदम उठाये जायें। उदाहरण के लिये सर्वप्रथम एक दृढ़ निश्चयी कानून बनाकर प्राथमिक,उच्च एवं उच्चतर शिक्षा के पाठयक्रमों में अनिवार्य रूप से हिंदी भाषा को शामिल किया जाये। इसके लिये यह आवश्यक है कि उसका पाठयक्रम 'राजभाषा" रूप के अनूरूप हो। राजभाषा की संवैधानिक व्याख्या और इसके संवैधानिक महत्व से सभी स्तर के कक्षाओं के शिक्षार्थियों को परिचित कराया जाये। यह मान्यता गलत है कि केवल दिलचस्प और उत्कृष्ट साहित्यिक रचनायें पढ़ाने से ही हिंदी का महत्व स्थापित हो जायेगा।

विद्यालय, महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय हो, औपचारिक शिक्षा के स्तर पर किसी न किसी रूप में भारत संघ की राजभाषा हिंदी की उपस्थिति बनी रहनी चाहिये। इसके अलावा अंग्रेजी माध्यम के वर्चस्व पर आधारित मानविकी, वाणिज्य या विज्ञान के सामान्य स्नातक व स्नातकोत्तर पाठयक्रमों में ही नहीं चिकित्सा, प्रबंधन, अभियांत्रिकी, पत्रकारिता और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे व्यवसायिक पाठयक्रमों में भी राजभाषा हिंदी एक अनिवार्य विषय के रूप में शामिल किया जाना चाहिये। इन संकायों के विद्यार्थियों को हिंदी के संवैधानिक महत्व की मूलभूत जानकारी होनी आवश्यक है। होता यह है कि उपरोक्त वर्णित संकायों में अध्ययनरत छात्रों के लिये अंग्रेजी की तुलना में हिंदी या अन्य भारतीय भाषायें केवल आंशिक बोलचाल की उपेक्षित भाषा बनकर रह जाती है।

दलगत राजनीति से उपर उठकर विधि निर्माण और नीति नियामक बनानेवालों को यह देखना होगा कि अंग्रेजी के वर्चस्व के कारण हमारा विकास अंग्रेजीपरस्त वर्ग तक न सिमटकर रह जाये।

तात्पर्य यह कि हिंदी को राजभाषा से आगे राष्ट्रभाषा बनाने का उद्देश्य पूरा होने की दिशा में यह आवश्यक है कि बुनियादी स्तर पर हिंदी की आधारभूत संवैधानिक जानकारी इस देश के हर प्रदेश के शिक्षा संस्थानों में अनिवार्य की जाये अन्यथा हिंदी केवल बोलचाल की औपचारिक और तथाकथित लोकप्रिय भाषा बनकर रह जायेगी।

राजीव रवि
सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी
मा.सं.वि. विभाग,
पश्चिम क्षेत्र

बीमा है जरूरी

बीमा है जरूरी भैया बीमा है जरूरी
जीवन शान से जीना है तो बीमा है जरूरी
छोटी सी है जिन्दगी, कब छोड़कर चली जाएगी
जब आपके पास होगी बीमा
तब परिवार की खुशियाँ लौट आएगी
यदि चाहिए आपको बीमा और बचत
तब इंडोमेंट पॉलिसी काम आएगी
जब चाहिए बच्चो का उज्जवल भविष्य
तब चाइल्ड पॉलिसी की याद आएगी
जीवन में चाहिए एशो आराम
तब ज्यादा पैसो की याद आएगी
ज्यादा पैसा तभी आएगा
जब युलिप पॉलिसी लिया जायेगा
जब हो जायेंगे हम बीमार
तब पैसा कहाँ से आएगा
जब होगा हेल्थ पॉलिसी
तब हर टेंशन दूर हो जायेगा !
जब हम 60 के हो जायेगे
तब नौकरी छूट जायेगी
और आमदनी खत्म हो जायेगी
तब पेंशन पॉलिसी की याद आएगी
और जीवन टेंशन मुक्त हो जायेगी
इसलिए बीमा है जरूरी भैया बीमा है जरूरी
समाज में सर उठाकर जीना है तो बीमा है जरूरी

अर्जुन कुमार सिंह
एलआईसी सहायक
डोमजूर शाखा
हावड़ा मंडल

क्या प्लानिंग है ?

चाहे किसी से फोन पर बात हो...
या किसी खास मौके पर मुलाकात हो..
हम सबकी जुबां पर बस यही सवाल..
"आगे की क्या प्लानिंग" बच्चों की ? ?
उनके 10th-12th बोर्ड आते ही..
ये विमर्श कुछ ज्यादा ही बढ़ जाता है..
बच्चे भविष्य में क्या कुछ करेंगे ?...
बस यही सवाल माता-पिता
के जेहन में आता है...
आखिर बच्चों की ऊँची ख्वाहिशों के..
परिणति पर पहुँचने का ही तो ये दौर है ...
कॉम्पटीशन हर फील्ड में जबरदस्त है..
फिर भी बूस्ट-अप के लिए...
"लगे रहो-लगे रहो" का ही शोर है..
हालांकि,
हम बखूबी जानते है कि...
अपने सपने उन पर थोपना नही है,
उनको उनकी मंजिल पर
जाने से रोकना नही है...
क्योंकि ये बच्चों की स्कूली बोर्ड परीक्षा..
पर हमारे लिए अग्निपरीक्षा की घड़ी है,
अच्छी परवरिश,
मूल्यों और संस्कारों को लेकर..
प्रश्नों की अनवरत सजी एक लड़ी है..
बेशक...
आज के कम्प्यूटर युग में कैरियर की,
जद्दोजहद देख मन घबरा जाता है..
पर भला बिन मेहनत के
यश किसके हिस्से में आता है ?
पहले क्या सब आसानी से मिल जाता था ? ?
नही,कभी भी नही,
गौर करें,
जिंदगी और जमाने की कशमकश..
पहले भी थी, आज भी है,
कल भी होगी, शायद और भी ज्यादा..
प्रतिस्पर्धा का रूप बदला है,
इच्छाओं, आकांक्षाओं स्वरूप नही,
"सफलता" भी वहां नही फटकती,
जहां चुभने वाली धूप नही,
तो आइए पीढ़ी-दर-पीढ़ी
सिखाने की परंपरा को आगे बढाते है....
कुछ नया नही,
पर पुरानी समझाहिशों को ही,
आधुनिक पीढ़ी को नये अंदाज में सिखाते है,
उन्हें बताते है कि,
फेमिली हिस्ट्री उनको मेंटली स्ट्रांग बनाती है,
उन्हें जानना जरूरी कि वे,
कितने हुनरदार दादी-नानी के नाती है,
माँ पापा कितने अवाड्र्स जीतकर लाते थे,
मामा मौसी कैसे गाने की महफ़िल सजाते थे,
जिस तरह घर में एलबम रखते है,
उन्हें ईयरबुक हमेशा रखना है..
जीवन में कुछ पाने का लक्ष्य,
हरदम, हर समय गोल सामने रखना है...
सारे काम छोड़ सप्ताह में एक बार,
खुद से कुछ देर करना है मुलाकात,
वक्त मुकर्रर कर अकेले ही में,
खुल कर करे खुद से ही बात,
किसी भी काम को करने के लिए,
"डेडलाइन" उनको डिसिप्लिण्ड बनाएगी,
ये आदत,
ब्रेन के कंसन्ट्रेसन के साथ,
बच्चों के कॉन्फिडेंस को भी बढ़ाएगी,
स्किल स्वेप से कौशल की अदला बदली,
व्यक्तित्व को निखारेगी,
जटिल से जटिल परीक्षा में सफलता के लिए,
ये आदत रंग लाएगी,
पूरे समय ऑनलाइन की मजबूरी,
पर रोजाना कुछ समय मोबाइल से दूरी जरूरी,
इसके लिए स्क्रीन डिटॉक्स फायदेमंद,
स्क्रीन देखने के बजाय सुने बातें चंद,
बेशक, हम सभी पेरेंट्स,
बच्चों से अपेक्षायें जरूर रखे,
पर परवरिश में ऐसे मूल्यों को भी सजाए,
छोटी छोटी सी समझाहिशो से,
बच्चों की सफलता की राह बनाये,
हमारे नोनिहाल हर एग्जाम में सफल,
बस इसी तरह रहे उनके साथ
हमारी पॉजिटिव दखल,
तो आइए, हम पेरेंट्स कुछ प्लानिंग करते है,
बच्चों के भविष्य संवारने,
थोड़ा लीक से हटकर भी चलते है,

अंजली खेर
शाखा क्र -2
भोपाल

शक्तिपुंज

मातृशक्ति ममता की मूरत,
लाड दुलार सलोनी सूरत।

माता बहन बेटी और वामा,
चारों रूप है शक्ति के नामा।

पहला रूप में तुम सृजन कर्ता मां हो,
तुम अनंत सहनशक्ति स्वरूपा हो,
प्रेम और समर्पण की वाहक हो,
भक्ति युक्ति मुक्ति की दाता हो।

तुम जगत जननी जीवन दायिनी,
तुम पालनहारी और सजग प्रहरी हो।

बाट निहारे मेरी पलकें बिछाए,
अपने घट घट में सदा मुझे बसाए।

मेरी हर सांस मे बसी हो तुम,
मेरी हर आस और विश्वास हो तुम।

स्नेह आशीष बना रहे मां,
आजन्म मैं तेरा आभारी रहूँ।

वसुधैव कुटुम्बकम की मिसाल रहे मां,
मन वचन कर्म से मैं आज्ञाकारी रहूं।

दूजा रूप बहना का प्यार,
बचपन की यादें,भावनाओं का ज्वार।

ठंडी हवा का झौंका बनकर,
जीवन में लाती तुम शीतल बयार।

तीजा रूप घर आंगन की शोभा,
बेटी का रूप निराली आभा।

मां बाप के कलेजे की कोर हो,
महकती बगिया की चहकती चिडिया हो।

आसमान से उतरी जैसे परी,
रौनक मधुर संगीत की लगे।

लाडली सुहानी मनीषा दुलारी,
मीठी सी मुस्कान मेरी बिटिया लगे।

चौथा रूप चंचला, हमराही हमसफर,
सच्ची राह दिखाए रश्मि बनकर।

न्यौछावर करती जो असीम प्यार,
पत्नी है सुख दुख की सच्ची साझेदार।

नारी तुम हो बागों की खुशबू,
मानव जाति की गरिमा तुमसे है।

सक्षम सुदृढ नवनिर्माण की नींव हो तुम,
हमारी आन बान और शान तुम से है।

हे दैव्य स्वरूपा, हे शक्तिपुंज,
निर्मल ह्रदय निश्छल मुस्कान।

मानवता की असीम गागर,
ममतामयी करुणा तेरी पहचान।

स्नेह, वात्सल्य और प्रेम भरी,
अटल अडिग अमिट छवि तोरी।

परिवार की खुशियों पर वारी,
सपने अपने कुर्बान करे नारी।

तुम त्याग और बलिदान का रूप हो,
शौर्य और मर्यादा की मिसाल हो।

हिम्मत हौसला और अटल विश्वास हो,
सफलता के नए आयाम चूमने को आतुर,
हे नारी ! तुम एक शक्तिपुंज हो।

भंवर लाल सुथार
संकाय सदस्य
प्रबंध विकास केंद्र, मुम्बई

मंजिल

पाकर खोना, खोकर पाना,
जीवन का क्रम चलते जाना।
सूरज उगता और छिप जाता,
दिन रात का चक्र चलता जाता।

पतझड़ के मौसम बाद,
ऋतुराज बसंत आता याद।
गम और खुशी दोनों हैं साथ,
हिम्मत का आंचल अपने हाथ।

जीवन है बढ़ने का नाम,
पीछे पग रखना है न काम।
सदा रहे तेरे उच्च विचार,
जीवन पथ पर कभी ना हार।

जो बीत गया मत दुःख कर,
आगे की सुधि तू अब कर।
समय व्यर्थ तू खो मत कर,
जय पराजय प्रभू अर्पित कर।

मत सोच, जो पाया रहेगा स्थिर,
लौटे न कभी जो गया है फिर।
नहीं मोह बंधन में बंध जाना,
सुख दुःख से परे उस मंजिल को पाना।
सुख दुःख से परे उस मंजिल को पाना।।

सुविधा शहाणे
पुस्तकालय अनुभाग
केंद्रीय कार्यालय

हिम्मत

जब चाह नहीं थी, तो कठिन थे सभी रास्ते,
हिम्मत जो मैंने की है, तो अब चाह नई है।

जब रूकना ही मुमकिन नहीं, तो डर है किसका,
हर मोड पर ये वक्त ने खंजर चुभाये हैं,
हिम्मत जो मैंने की है, तो अब चाह नई है।

मालूम था की राज में सिर्फ दोस्त दोस्त न होंगे,
अब दुश्मनों के लिए भी नई बात जगी है।
हिम्मत जो मैंने की है, तो अब चाह नई है।

हर चीज में मैंने अभी अच्छाई पाई है,
हिम्मत जो मैंने की है, तो अब चाह नई है।

झूक-झूक के ये जीना, कोई जीना तो नहीं है,
सिर उठा के जरा देख, उमंग नई है।
हिम्मत जो मैंने की है, तो अब चाह नई है।

रोते हुए खड़ी थी मैं, झोली में गम लिए,
विश्वास से हर खुशी, हर हंसी घर लौट आई है।
हिम्मत जो मैंने की है, तो अब चाह नई है।

जीतने की चाह क्यों ना मैं करूं,
मेहनत को मैंने अपना भगवान माना है।
हिम्मत जो मैंने की है, तो अब चाह नई है।

लाखों जहां में होंगे जो हार के मरे,
मरना अगर हो शान से, तो जीत कर मरे।
हिम्मत जो मैंने की है, तो अब चाह नई है।

श्वेता रायकर
संपदा विभाग
केंद्रीय कार्यालय

सही चाल

महान रामानुजन् शिक्षक के कई शिष्य थे।

एक दिन उनमें से एक को उसके साथी छात्रों ने चोरी करते हुए पकड़ा और उन्होंने उसकी सूचना बेंजी को दी लेकिन उसने लड़के के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की।

कुछ दिनों बाद वही लड़का फिर से चोरी करते पकड़ा गया। और फिर, बेंजी ने कुछ नहीं किया।

इसने अन्य छात्रों को नाराज कर दिया जिन्होंने चोर को बर्खास्त करने की मांग करते हुए याचिका दायर की उन्होंने धमकी दी कि अगर लड़के को रहने दिया गया तो वे सामूहिक रूप से चले जाएंगे।

शिक्षक ने छात्रों की बैठक बुलाई। जब वे इकट्ठे हुए तो उसने उनसे **कहा:** आप अच्छे लड़के हो जो जानते हो कि क्या सही है और क्या गलत। यदि आप छोड़ देते हैं तो आपको किसी अन्य स्कूल में प्रवेश लेने में कोई परेशानी नहीं होगी। पर तुम्हारे उस भाई का क्या जो सही-गलत का फर्क भी नहीं जानता ? अगर मैं नहीं करूंगा तो उसे कौन पढ़ाएगा? नहीं, मैं उसे जाने के लिए नहीं कह सकता, भले ही इसका मतलब आप सभी को खोना क्यों न हो।"

चोरी करने वाले लड़के के गालों पर आंसू छलक पड़े। उसने फिर कभी चोरी नहीं की और बाद के जीवन में अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध हो गया।

कहानी की शिक्षा: एक सही कदम जीवन का निर्माण कर सकता है।

रूपा भंडारी
मानव संसाधन विकास
संगठन विकास विभाग
केंद्रीय कार्यालय

मेरी भाषा हिन्दी

मैं हिन्दुस्तानी, मेरी भाषा हिन्दी, सहज, सरल मनोहारी हिन्दी।
शुद्ध व्याकरण, शब्द है मृदु, अर्थ है अलौकिक, समास सुंदर, संधि।।
अलंकार शब्दों का सौंदर्य बढ़ाये, इसमें नव रस निहित गेयता पावे।
कश्मीर से कन्याकुमारी तक, एकसूत्र में बंध कर एकता लाये।।
इस भाषा में काव्य, गद्य, पद्य व साहित्य देश का गौरव बढ़ाये।
कार्यालयीन भाषा पद की गरिमा पाये।।
आओ शपथ लें, हिन्दी भाषा को राष्ट्र भाषा का सम्मान मिले।
गर्व है मुझे मैं हिन्दुस्तानी हूं, मेरी प्रिय भाषा हिन्दी।।

गायत्री रांजणे
कार्यालस सेवा विभाग
केंद्रीय कार्यालय

कहानी - लालच

आज से करीब 20 साल पहले की बात है मैं उस समय पटना में पढ़ा करता था। तब मैंने सामाचार के माध्यम से अपने शहर बिक्रमगंज जो हमारे गाँव से तकरीबन 5 किलोमिटर की दूरी पर था का एक न्युज सुना। वहां एक व्यवसायी पैसे की लालच में आकर एक ऐसा अपराध कर बैठा जो हमारे छोटे से शहर में होना अकल्पनीय था। ऐसा नहीं कि इस तरह का अपराधा कभी हुआ न होगा लेकिन छोटे शहर में ऐसी घटना बहुत ही कम हुआ करती हैं। घटना कुछ यु थी कि एक कपड़ा व्यापारी जो बिक्रमगंज थाना अंतर्गत धनगाई ग्राम जो पुलिस थाने से महज 500 मिटर की दूरी पर रहता था । उसकी दुकान उस समय काफी प्रसिद्ध थी और खूब कमाई कर रही थी। बिक्रमगंज इलाके में नामी व्यवसायीयों में से उसका नाम था। लेकिन अचानक ऐसा क्या हुआ जिससे उसके पूरे परिवार के जीवन में अंधेरा छा गया ।

बिक्रमगन निवासी व्यवसायी जिसका नाम नगेश्वर या अपनी पत्नी और बेटे राजेश के साथ अच्छी तरह से जीवन व्यतीत कर रहे थे। उसका लड़का राजेश बड़ा ही सुशील, कर्मनिष्ठ और चेहरे से भी बहुत खूबसुरत था। उसकी उम्र अभी 24 वर्ष थी तो उसके पिता ने उसकी शादी मालती नाम की लड़की जिसकी उम्र 22 वर्ष थी से कर दी । एक वर्ष शादी का अच्छी तरह से बिता फिर एक एलआईसी एजेंट उनके घर गया और टर्म इंसुरेंस के बारे में व्यवसायी नगेश्वर को अच्छी तरह से समझाया तो उसने अपने बेटे राजेश के नाम से टर्म पॉलिसी लेने की सोची फिर ऐजेंट व्यवसायी और राजेश आपस में बात करने लगे इतने में राजेश की बीवी जो कि उतना सुन्दर नहीं थी चाय लेकर आयी। एलआईसी एजेंट का ध्यान उसके तरफ गया। मालती के जाने के बाद एलआईसी एजेंट ने ऐसा क्या पाठ पढ़ाया की राजेश का ध्यान परिवर्तन हो गया और मालती के नाम से एक करोड का टर्म इंश्योरेंस ले लिया और राजेश को नामित कर दिया। कुछ कुछ सालों तक वह सालाना बीमा किस्त भरता रहा किसी को कुछ शक भी न हुआ। वह अपनी पत्नी से झूठी प्यार जताते रहा । पत्नी हमेशा खुश रहती कि उसको इतना प्यार करने वाले पति मिला । राजेश हमेशा अपनी पत्नी को कभी पहाड़ो, कभी समुद्र तटों पर घुमाने ले जाया करता था । वह हमेशा मौका खोजते रहता था कि पत्नी को कैसे ठिकाना लगाया जा सके और किसी को उसपर शक भी न हो और सबको एक दुर्घटना लगे ।

एक दिन दोनों अपनी कार से किसी रिश्तेदार के घर शादी में जा रहे थे । ठंढ का महीना था ठंड़ी-ठंड़ी हवाँए चल रही थी । रात का समय था सामने आती एक गाड़ी की लाईट से उसका चकमका गया और पास एक पेड़ से जा टकराया। टक्कर ज्यादा जोरदार न था इसलिए दोनो को ज्यादा चोटे नही आयी । राजेश को पैर मे चोटे आई जिससे वो अच्छी तरह से खड़ा नहीं हो पा रहा था। अचानक उसके मन में ख्याल आया कि क्यो न बीवि को किसी गाडी के आगे धक्का दे दिया जाए मौका भी था और किसी को शक भी न होगा। यह सोचकर सामने आती एक बड़े ट्रक के आगे धक्का दे दिया इसके बाद जो वो दिल दहलाने वाला था। ट्रक चालक जब तक रोकता ट्रक मालती के सिर के उपर चढ़ गया और मौके पर ही मालती की मौत हो गई। यह देखकर ट्रक चालक डर गया वहां से भाग खड़ा हुआ। राजेश अपनी पत्नी की लाश देखकर अन्दर अन्दर बहुत खुश हुआ । लेकिन किसी को शक न हो अपनी जाहिर न की। चूँकि रात का समय था और ठंड़ी भी बढ़ गयी थी वह सोचने लगा की यहां से जाया कैसे जाए। अचानक गाडी की लाईट दिखाई दी और धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ने लगा । राजेश ने लड़खडाते हुए गाडी को हाथ दिखाया रोकने के लिए और चालक से बोला की जाकर थाने में पुलिस से घटना को अवगत कराये। चालक जाकर पुलिस को अवगत कराता है और फिर एम्बुलेंस मौके वारदात पर पहुंचती है और दोनो को अस्पताल ले जाती है।

अस्पताल में राजेश का इलाज हुआ और मालती का पोस्टमार्टम हुआ पोस्टमार्टम में हत्या का कोई निशान नहीं मिला। कुछ समय बाद राजेश और मालती के परिवार वाले भी आ आ पहुंचते है। फिर क्या था चारों तरफ रोने की आवाज । अब सुबह हो चुकी थी । पूरा परिवार रोते बिलखते राजेश और मालती को लेकर बिक्रमगंज चले गये वहां गलती का अंतिम संस्कार हुआ। अभी 20 दिन ही हुए थे कि एलआईसी एजेंट घर आता है। चूँकि राजेश पॉलिसी का नामित था इसलिए उसकी दस्तावेज लेकर एलआईसी ऑफिस क्लेम के लिए ले गया । 15 दिन के अन्दर राजेश के खाते में 1 करोड़ की राशी आ जाती है। सभी परिवार वाले खुश हो जाते है। लेकिन एक बार मन मे लालच आ जाती है तो आसानी खत्म नहीं होती दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है। अब राजेश ने शार्टकट तरीके से पैसा कमाना सीख

सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रुप से शुद्ध किया हुआ हो। **शंकराचार्य**

लिया था। राजेश अभी भी जवान था सुन्दर भी था उसकी अभी कोई संतान भी न थी। फिर क्या था कमाई का नया मौका तलाशने लगा । राजेश की फिर से सुनिता नाम की के साथ शादी हो गई। 2-3 महीने बाद एलआईसी एजेंट फिर उसके घर आया और सुनिता के नाम टर्म पॉलिसी किया । राजेश को पैसे की इस कदर लत लग गई कि उसने एक साल के अन्दर ही उसे मारने का प्लान करने लगा। फिर से मौके की तलाश करने लगा । राजेश अपनी पत्नी को भी दुकान पर बैठने के लिए कहा। दोनों अब दुकान पर बैठने लगें। 2-3 महीने हो गए कोई उपाय न सुझ रहा था कि उसे मारा कैसे जाए । अचानक उसके मन में एक उपाय सुझा कि क्यो न अपनी पत्नी को दकान में दुकान के साथ जलाकर मार दिया जाए। इससे हमको दो-दो फायदा हो जाएगा एक तो दुकान का इंश्योरेंस और दूसरी अपनी पत्नी का। लालच इस कदर बढ़ गया कि उसको समझने की शक्ति खत्म हो गई कि इसका प्रतिकुल प्रभाव भी हो सकता है। फिर एकदिन मौका पाकर दुकान में आग लगा दी और बाहर से दरवाजा बंद कर दिया अन्दर में उसकी पत्नी चिल्ला रही थी आग की लपटे तेज होने लगी ।

आग की लपटे देखकर आस-पास के लोग आ गये और आग बुझाने की कोशिश करने लगे। जैसे तैसे दरवाजा खुला और सुनिता को निकाला गया। लेकिन आग की लपटों से सुनिता बुरी तरह झुलस गयी थी। एक कहावत है बुरे कर्म ज्यादा दिन तक नही रहता । पुलिस मौके पर पहुँच गयी । सुनिता को अस्पताल ले जाया गया । राजेश और उसका सारा परिवार घर छोडकर भाग चुका था । इलाज के दौरान पुलिस ने सुनिता का बयान दर्ज किया । सुनिता ने पुलिस को बयान दिया कि पति और उसके परिवार वाले इंसुरेंस के पैसे के लिए उसको जलाने का षडयंत्र किया । 2 3 दिन तक पुलिस पुलिस राजेश और उसके परिवार को खोजती रही काफि मसक्कत के बाद आखिरकार राजेश और उसके परिवार को किसी रिश्तेदार के घर से घर दबोचा गया। इसके बाद राजेश और उसके परिवार वालों को पूरा बिक्रमगंज गधे पर बैठाकर घुमाया गया और जेल में बंद कर दिया गया। थोड़े से पैसे के लालच में पूरा परिवार बर्बाद हो गया।

यह कहानी एक सत्यकथा पर आधारित है। इस कहानी से हमे शिक्षा मिलती है कि गलत तरीके से किया गया काम ज्यादा नहीं चलता और हमेशा दुखदायी होता है । इस तरह की खुशियाँ पलभर के लिए होती है। इसलिए ज्यादा लालच नही करना चाहिए ।

अर्जुन कुमार सिंह
सहायक
डोमजुर शाखा
हावड़ा मंडल

सुबह सुहानी

किसी के हिस्से खुशियां और मुस्कराहट,
किसी को अपनी व्यथा आंसुओं में बहानी है,
यहां हर किसी की अपनी अलग कहानी है।

कोई जीता जीवन नीरस सा, बोझिल मन से,
किसी के दिल में उमंग और लहू में रवानी है,
यहां हर किसी की अपनी अलग कहानी है।

कोई करता प्यार देह से, कोई करता नाम से,
किसी का रिश्ता प्रियतम से फकत रूहानी है,
यहां हर किसी की अपनी अलग कहानी है।

किसी के जीवन में लिखा संघर्ष दिन रात,
किसी की हर शाम रंगीन और
सुबह सुहानी है,
यहाँ हर किसी की अपनी अलग कहानी है।

कोई जीता सपनों में, खोया रहता ख्यालों में,
किसी को ख्वाबों की दुनिया लगती बेमानी है,
यहाँ हर किसी की अपनी अलग कहानी है।

किसी को मिल जाती दौलत असबाब विरासत में,
किसी को अपनी राह ए मंज़िल खुद बनानी है,
यहाँ हर किसी की अपनी अलग कहानी है।

कोई मर मिटता है किसी से किए वादे के लिए,
किसी के लिए ये वादे जुमले और बाते जुबानी है,
यहाँ हर किसी की अपनी अलग कहानी है।

किसी की किस्मत खिलखिलाती नवांकुर सी,
किसी के भाग्य में वहीं मुस्कराहटे पुरानी है,
यहाँ हर किसी की अपनी अलग कहानी है।

कोई रहता व्यस्त जिंदगी के झमेलों में,
किसी के लिए ये दुनिया सरायफानी है,
यहाँ हर किसी की अपनी अलग कहानी है।

प्रतिभा शर्मा
वे. क्र. 145435
उ.श्रे.स.
अजमेर मंडल

लीची

लीची एक स्वादिष्ट फल है। इसका वैज्ञानिक नाम लीची चीनेंसिस (Litchi chinensis) है, जो सोपबैरी (Soapberry) परिवार से आती है। इसके पेड़ की लंबाई 30 मीटर तक की होती है। जबकि इसकी पत्तियां 5 से 15 सेंटीमीटर तक लंबी होती हैं।

यह एक उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय फल का पेड़ है जो सबसे पहले चीन के फुजियान (Fujian) और गुआंग्डोंग (Guangdong) क्षेत्रों में पाया गया था। यह अपने सुगंधित और मीठे स्वाद के लिए जानी जाती है। चीन के बाद, भारत दुनिया में लीची के उत्पादन में दूसरे स्थान पर है। वर्तमान में लीची, मध्य और दक्षिण अमेरिका के अलावा अफ्रीका के कुछ हिस्सों और पूरे एशिया में उगाई जाती है। वहीं, चीन, भारत, दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, मॉरीशस, मेडागास्कर और थाईलैंड दुनिया के प्रमुख लीची उत्पादक देश माने जाते हैं ।

लीची गर्मियों के खास फलों में से एक है। गर्मियों में लीची के खाने से शरीर को कई समस्याओं से बचाया जा सकता है। लीची को पानी का अच्छा सोर्स माना जाता है। लीची में विटामिन सी, विटामिन बी6, नियासिन, राइबोफ्लेविन, फोलेट, तांबा, पोटेशियम, फॉस्फोरस, मैग्निशियम और मैग्नीज जैसे खनिज पाए जाते हैं, जो हमारे शरीर और पेट को ठंडक देते है। लीची में पाए जाने वाले पोषक तत्व इम्यूनिटी को मजबूत बनाने में मददगार माने जाते हैं। इतना ही नहीं लीची को पाचन के लिए भी काफी अच्छा माना जाता है।

लीची खाने के फायदे:

1. डिहाइड्रेशन

लीची को पानी का अच्छा सोर्स माना जाता है। गर्मियों में शरीर को डिहाइड्रेशन से बचाने के लिए आप लीची को डाइट में शामिल कर सकते हैं।

2. इम्यूनिटी

इम्यूनिटी को मजबूत बनाने में मददगार है ये फल । लीची में विटामिन सी, बीटा कैरोटीन, नियासिन, राइबोफ्लेविन और फोलेट भरपूर होता है जो इम्यूनिटी को मजबूत बनाने में मदद कर सकते हैं।

3. हृदय स्वास्थ्य के लिए

लीची खाने के फायदे हृदय स्वास्थ्य के लिए भी देखे जा सकते हैं। दरअसल, लीची में क्वेरसेटिन (Quercetin) नामक बायो एक्टिव कंपाउंड मौजूद होता है, जो कार्डियोवैस्कुलर हेल्थ यानी हृदय को स्वस्थ रखने और ब्लड प्रेशर को संतुलित रखने में मददगार साबित हो सकता है । इसके अलावा, लीची में पॉलीफेनोल की अधिक मात्रा पाई जाती है, जो सीने से संबंधित समस्याओं के लिए उपयोगी हो सकता है। वहीं, इस पर हुए शोध बताते हैं कि लीची का अर्क, एंटीऑक्सीडेंट (मुक्त कणों से लड़ने वाला) और कार्डियो प्रोटेक्शन (दिल को बीमारियों से बचाने वाला) गुण मौजूद होता है। यही वजह है कि इसे हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी माना जा सकता है। ऐसे में हृदय के लिए स्वस्थ आहार डाइट में लीची को शामिल करना अच्छा विकल्प हो सकता है।

4. एंटी कैंसर गुण

लीची का सेवन ब्रेस्ट कैंसर से बचाव में मदद कर सकता है। इस बारे में एनसीबीआई (National Center for Biotechnology Information) की वेबसाइट पर एक रिसर्च प्रकाशित है, जिसमें बताया गया है कि लीची ही नहीं, बल्कि इसके छिलके और बीज में भी एंटी कैंसर प्रभाव मौजूद होते हैं, जो कैंसर सेल्स को पनपने से रोकने में काफी हद तक मददगार साबित हो सकते हैं। लीची का सेवन ब्रेस्ट कैंसर, लिवर कैंसर या ट्यूमर के जोखिम को कम कर सकता है ।

गुस्सा मूर्खता से आरंभ होता है और पश्चाताप पर समाप्त होता है। **पाइथागोरस**

5. पाचन में सुधार

पाचन संबंधी समस्याओं के लिए भी लीची के फायदे देखे जा सकते हैं। इस बात की पुष्टि एनसीबीआई की वेबसाइट पर प्रकाशित एक शोध से होती है। इस शोध में साफ तौर से जिक्र मिलता है कि लीची पाचन में सुधार कर सकती है । दरअसल, लीची में कई तरह के बायोएक्टिव कंपाउंड जैसे - फ्लेवोनोइड्स (Flavonoids), स्टेरोल्स (Sterols), ट्राइटरपेंस (Triterpenes), फिनोलिक (Phenolic) आदि मौजूद होते हैं, जो सेहत के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

6. वजन नियंत्रण के लिए

लीची को मोटापे की समस्या का भी हल निकालने में लाभकारी माना जा सकता है। ऐसा इसलिए क्योंकि लीची का अर्क एंटी ओबेसिटी (मोटापा कम करने में सहायक) गुण प्रदर्शित कर सकता है । इसके अलावा, वजन नियंत्रण के लिए लीची के बीज के फायदे भी देखे जा सकते हैं। बताया जाता है कि लीची के बीज में ओलिगोनॉल मौजूद होता है, जो वेट कंट्रोलिंग यानी वजन नियंत्रण करने वाले एजेंट के रूप में मददगार साबित हो सकता है । इस आधार पर यह माना जा सकता है कि वजन कम करने के लिए लीची फायदेमंद साबित हो सकती है। हालांकि, ध्यान रहे वजन कम करने के लिए सिर्फ लीची पर ही निर्भर न रहें, बल्कि संतुलित डाइट और नियमित वजन घटाने वाले व्यायाम व योग भी करते रहें।

7. त्वचा के स्वास्थ्य के लिए

स्वास्थ्य के साथ-साथ लीची त्वचा के लिए भी लाभकारी हो सकती है। इस पर हुए शोध से जानकारी मिलती है कि लीची बढ़ते उम्र के प्रभावों को कम करने के साथ-साथ दाग-धब्बों से भी छुटकारा दिलाने में मददगार साबित हो सकती है ।

8. बालों के लिए

रुखे और बेजान बाल किसी के भी व्यक्तित्व के निखार को कम कर सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि सही तरीके से बालों पर ध्यान दिया जाए। वहीं, लीची के फायदे बालों की देखभाल के लिए देखे जा सकते हैं। इससे संबंधित एक रिसर्च में साफ तौर से यह बताया गया है कि लीची बालों के विकास को बढ़ावा देने और उसे चमकदार बनाने में लाभकारी साबित हो सकती है ।

संकलन
परविंदर कुमार
स.प्र.अ. (राजभाषा)
केंद्रीय कार्यालय

सहायता

एक सेमिनार में 200 लोगो ने हिस्सा लिया। प्रवक्ता ने हर प्रतिभागी को एक गुब्बारा दिया और उस पर अपना नाम लिखने को कहा। वहां बैठे सभी लोगो ने गुब्बारे पर अपना अपना नाम लिख दिया।

प्रवक्ता ने उन गुब्बारों को लिया और एक कमरे में रख दिया। फिर प्रवक्ता ने सभी प्रतिभागियों के कहा आप लोग उस कमरे में जाइये और 5 मिनट के अंदर अपने नाम का गुब्बारा ले के आइये।

सभी प्रतिभागी कमरे के अंदर गए। और एक दूसरे को धक्का देते हुए अपने नाम का गुब्बारा ढूंढ़ने लगे। नतीजा ये हुआ की 5 मिनिट बीत गए पर किसी को भी अपने नाम का गुब्बारा नहीं मिला।

इसके बाद प्रवक्ता कहते है की एक बार फिर से अंदर जाओ और कोई सा भी गुब्बारा मिले उसे उठा लो और उसपे जिसका नाम लिखा है उसे दे दो। 5 मिनिट से भी कम समय से सबके पास अपने नाम का गुब्बारा आ गया।

कहानी से सीख : इस कहानी से हमें ये शिक्षा मिलती है की अपने ही भलाई के बारे बस नहीं सोचना चाहिए। दुसरो की मदद करने से भी हमारा काम आसान हो सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमता(एआई) : सुगमता या चुनौती

"आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डिजाइन में इंसान से बेहतर हो जाएगा तो वह इंसान की मदद के बिना ही पुनरावृत्ति से स्वयं को उन्नत कर सकेगा। मनुष्य, जो धीमे जैविक विकास के कारण सीमित हैं, प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते और उनका स्थान ले लिया जाएगा"

- स्टीफन हाकिंग

आज प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास की एक भरपूर झलक हमें कम्प्यूटर के विकास क्रम से भी मिलती है जिसका प्रारंभिक स्वरूप जहां मात्र कैल्कुलेटर्स या टैबुलेटर्स का था वह वैक्यूम ट्यूब्स, ट्रांजिस्टर्स और इंटीग्रेटेड सर्किट्स से गुजरते हुए अब अत्याधुनिक सुपर कम्प्यूटर और क्वाण्टम कम्प्यूटर तक आ पहुंचा है। आज का कम्प्यूटर अपनी गणनात्मक क्षमता के बूते मनुष्य के दिमाग को मात देने की 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' यानि 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' की सीमा छू रहा है और एक संभावना है कि यह 80 सालों में इंसान को भी पीछे छोड़ देगा।

इसमें कोई शक नहीं है कि वह 'बुद्धिमत्ता' ही है जिसकी बदौलत इंसान अन्य जीवों से अलग है और दुनिया पर राज कर रहा है। जहां अन्य जीवों ने प्रकृति के साथ स्वयं को ढाल लिया है वहीं मनुष्य ने अपनी बुद्धिमता के बूते प्रकृति को स्वयं के अनुसार ढालने की कोशिश की है। इंसान के पास मस्तिष्क है जो सोच सकता है, समझ सकता है और सोच-विचार कर निर्णय ले सकता है। लेकिन यदि कम्प्यूटर लगातार मूरे के नियम का पालन करते हुए हर 18 महीने में अपनी प्रोसेसिंग स्पीड और मेमोरी की क्षमता को दोगुना कर सकते हैं, तो नतीजा यह होगा कि वह अगले 80-90 सालों में मानवीय बुद्धिमता को पीछे छोड़ देगा। महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग यह कहकर धरती से जा चुके हैं कि जब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डिजाइन में इंसान से बेहतर हो जाएगा तो वह इंसान की मदद के बिना ही पुनरावृत्ति से स्वयं को उन्नत कर सकेगा। हम बुद्धिमत्ता के विस्फोट की चुनौती का सामना कर रहे होंगे, जिसका अंतिम परिणाम ऐसी मशीनों के रूप में दिखेगा, जिनकी बुद्धिमत्ता उससे कहीं ज्यादा होगी।

1980 के दौर में जब लोग बुद्धिमता के बारे में बात किया करते थे, तो मनुष्य की श्रेष्ठता के प्राथमिक सबूत के तौर पर शतरंज का आदतन इस्तेमाल करते थे। कहा जाता था कि इंसान तो अपनी बुद्धि से किसी मोहरे की उसके स्थान के हिसाब से ताकत और कीमत का अंदाजा लगा सकता है लेकिन मशीन नहीं, क्योंकि मशीन आम इंसान की तरह 'कॉमन सेंस' का इस्तेमाल नहीं कर सकता। मगर ऐसा नहीं हुआ, 10 फरवरी 1996 को आईबीएम सुपर कम्प्यूटर डीप ब्ल्यू ने विश्व चैंपियन शतरंज खिलाड़ी गैरी कास्पोरोव को हराकर इंसानी श्रेष्ठता के इस खास दावे को झूठा साबित कर दिया

चुनौतीयां

"कुछ लोग इसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहते हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि यह तकनीक हमें आगे बढ़ाएगी। इसलिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बजाय, मुझे लगता है कि हम अपनी बुद्धि को बढ़ाएंगे" -

गिनी रोमेटी (आईबीएम सीईओ)

मशीनें बुद्धिमता में हमसे कितना भी आगे निकल जाएं लेकिन इंसान में कुछ विशेषताएं ऐसी हैं, जो अमूल्य है और जिनकी नकल कर पाना आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए लगभग नामुमकिन है। जैसे- संवेदना। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस गुलाब की पहचान तो कर सकता है, लेकिन उसे गुलाब की 'गुलाबी' के बारे में कोई जानकारी नहीं होगी। यह किसी चीज में किसी भी योग्यता (किसी व्यक्ति द्वारा देखी गई या अनुभव की गई गुणवत्ता या गुण) की विशेषता नहीं बता सकता है, जिसे मानव मस्तिष्क आसानी से कर लेता है। यह कह पाना मुश्किल है कि एआई मानव मस्तिष्क की सूक्ष्म बारीकियों और

भावनाओं के जटिल जाल को कभी समझ सकता है। लेकिन मशीने वर्तमान में इंसान द्वारा किए जा रहे 99 प्रतिशत कार्यों को अंजाम देने में भविष्य में सक्षम हो जाएंगी सिर्फ 1 प्रतिशत मानवीय खूबियां और काबलियतें संभवत: वे कभी भी हासिल नहीं कर सकेंगी, जिसके लिए चेतना, संवेदना और भावना की जरूरत होती है।

अति सर्वत्र वर्जयेत्

ज़ाहिर है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक का सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों के गहन विश्लेषण की जरूरत है। पुराणों में कहा गया है- 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' अर्थात् अति करने से हमेशा बचना चाहिए अति का परिणाम हमेशा हानिकारक होता है। यह बात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर भी लागू होती है। अगर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर बेवजह निर्भरता बढ़ती गई तो यह मानवता के लिए बहुत बड़ा खतरा बन सकती है। हालांकि यह निश्चित है कि भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस हमारा जरूरी साथी बन जाएगा, जो बच्चों और बुजुर्गों की देखभाल में मदद करेगा, बीमारी का पता लगाएगा, दवाइयों के निर्माण में वैज्ञानिकों की सहायता करेगा, शिक्षा और परामर्श देगा। अगर मानव हित में और जीवन को बेहतर बनाने के लिए एआई का सृजन किया जाता है तो इसकी संभावनाएं अनंत हैं और उत्साहवर्धक भी।

हिमांशु
सहायक प्रशासनिक अधिकारी,
राजभाषा विभाग
केंद्रीय कार्यालय

कर्मों की खेती

वक्त की ज़मीन पर कर्मों का हल जोतकर
जीवन-धरा पर हम 'किसान' खेती करते।

अच्छे-बुरे मनोविचार के बीज रोपकर,
मीठे-कड़वे वचनों की पिलाई करते।

कर्मषील बन खाद से पालन-पोषण कर,
अवरोधों की व्यर्थ 'खरपतवार' भी हटाते।

दु:ख की धूप में उपज को तपाकर,
सुख की बारिष में सरोबार लहलहाते।

किन्तु अनहोनी-अनचाहा 'भाग्य' देखकर,
'खराब' का दोष, प्रभु-और-प्रकृति पर मढ़ते।

क्या दिया-बोया, पहले यह भूलाकर,
निष्पक्ष-सत्य आत्म-निरीक्षण से भागते।

कर्म-भोग से बच न सका कोई भी 'देव-असुर',
जन्म-जन्मान्तर संचित कर्म, 'साया' बन चलते।

मिट न सके एक कुकर्म, लाख दान-पुण्य कर,
'धर्मराज' खातों का लेखा, अलग-अलग रखते।

सत्कर्म किये जा अथक, शीघ्र प्रतिफल छोड़कर,
कब, कितना, कैसे मिले, 'स्वलिखित' भाग्य स्वीकारते।

श्रेष्ठ कर्म से मन, सुख-षान्त रहे निरन्तर,
'ढाल' बन शुभाषीष, हमें कठिनाई से बचाते।

स्वार्थी बन अभिषाप न लेना, किसे दु:खी कर,
उम्मीद जैसी लोगों से, वही व्यवहार खुद अपनाते।

संकल्प ही मूल-कर्म है, 'सोचना' भी विचारकर,
दूसरों के 'अन्नदाता' बन, अपना भी पेट भरते।

अपने ही 'कर्मों की खेती' है, आज और कल हमारा,
'बीज' ऐसा बोना, मन हर्षित हो सदा 'फसल' काटते।।

दिलीप सचदेव
उदयपुर मंडल कार्यालय

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी के बढ़ते कदम

विश्व की सबसे ज्यादा बोले जानेवाली भाषाओं में चार प्रमुख हैं:- मंदारिन (चीनी), अंग्रेजी, हिन्दी तथा स्पेनिश। यद्यपि मंदारिन भाषा विश्व भर में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाती है; किन्तु वह अपने लोगों के दायरे से आगे नहीं जाती है और इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अंग्रेजी के बाद हिन्दी विश्व की सबसे बड़ी संपर्क भाषा के तौर पर समादृत है। संयुक्त राष्ट्र संघ में आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त 6 भाषाएँ हैं - मंदारिन, अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी, स्पैनिश तथा अरबी। किन्तु, संयुक्त राष्ट्र संघ के सचिवालय में कामकाज की दो प्रमुख भाषाएँ हैं:- अंग्रेजी और फ्रेंच। बोलने वालों की संख्या, गुणवत्ता, सरकारी कामकाज में उपयोग, संपर्क क्षमता, समृद्ध साहित्य आदि गुणों को देखते हुए विश्व में बोलने वालों की संख्या के हिसाब से हिन्दी निश्चय ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के योग्य है।

विगत 10 जून 2022 का दिन हिन्दी समेत भारतीय भाषाओं के लिए ऐतिहासिक दिवस साबित हुआ है। इस दिन संयुक्त राष्ट्र महासभा में बहुभाषावाद संबंधी पारित प्रस्ताव में हिन्दी भाषा का उल्लेख हुआ। प्रस्ताव में बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए संघ की 6 आधिकारिक भाषाओं के अतिरिक्त हिन्दी, बंगला, उर्दू, पुर्तगाली, स्वाहिली और फारसी को संयुक्त राष्ट्र के कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। यह संयुक्त राष्ट्र के कामकाज के तरीके में एक बड़े परिवर्तन का संकेत है। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्र के सभी आवश्यक कामकाज और सूचनाओं को इसकी आधिकारिक भाषाओं के अलावा दूसरी भाषाओं यथा-हिन्दी, बंगला और उर्दू में भी जारी किया जाय। यह तथ्य भी ध्यातव्य है कि बहुभाषावाद को संयुक्त राष्ट्र के मूल सिद्धांतों में गिना जाता है। इस संदर्भ में 1 फरवरी 1946 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के पहले सत्र में अपनाए गए सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 13 (1) की चर्चा करना प्रासंगिक होगा। इसमें कहा गया था कि सं राष्ट्र अपने उेश्यों को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक कि दुनिया के लोगों को इसके उेश्यों और क्रियाकलापों की उचित जानकारी नहीं हो जाए। भावार्थ यह है कि संप्रेषणीयता हेतु भाषा की भूमिका अहम हो जाती है। हमारा देश संयुक्त राष्ट्र के इस विचार के साथ रहा है। भारत वर्ष 2018 से ही संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग के साथ साझेदारी कर वहाँ हिन्दी भाषा की पहुँच बढ़ाते हुए विष्व में हिन्दी भाषियों को जोड़ने में लगा है। यह भी प्रशंसनीय पहल है कि संयुक्त राष्ट्र की वेबसाइट और इसके इंटरनेट मीडिया खातों के माध्यम से हिन्दी में राष्ट्र संघ के समाचारों का पूर्व से प्रसारण हो रहा है।

यह हर्ष का विषय है कि हाल ही में 17 जुलाई, 2023 को संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थायी प्रतिनिधि राजदूत रूचिरा कंबोज ने सूचित किया कि इस वैश्विक संस्था में हिन्दी भाषा के उपयोग और समावेषी संवाद की समझ को बढ़ावा देने के लिए भारत द्वारा स्वैच्छिक योगदान के तहत 10 लाख अमेरिकी डॉलर का योगदान दिया गया है। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ के वैश्विक संचार विभाग की अवर महासचिव मेलिसा फ्लेमिंग को 10 लाख अमेरिकी डॉलर का चेक सौंपा। ध्यातव्य है कि हिन्दी में संयुक्त राष्ट्र संघ समाचार यू एन न्यूज ट्विटर इंस्टाग्राम और फेसबुक सहित विभिन्न मंचों के साथ-साथ साप्ताहिक यू एन न्यूज-हिन्दी ऑडियो बुलेटिन के माध्यम से प्रसारित किया जाता है।

भारतीय भाषाओं में हिन्दी, बांग्ला और उर्दू बोलने वालों का कुल योग किया जाये तो हम मंदारिन बोलने वालों से अधिक हैं। इन भाषाओं को मिली स्वीकृति से संयुक्त राष्ट्र की पहुँच इन्हें बोलने वाली एक अरब की आबादी तक सीधे तौर पर बन गई है। यह भी उत्साहवर्धक तथ्य है कि संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी आबूधाबी ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अरबी और अँग्रेजी के बाद हिन्दी को अपने अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में सम्मिलित किया है। यह वैष्विक स्तर पर हिन्दी के बढ़ते प्रभाव एवं सम्मान को दर्शाता है।

अब तक विश्व में सम्पन्न 12 विश्व हिन्दी सम्मेलनों में हिन्दी की व्यापकता, प्रभाव, प्रयोग आदि को देखते हुए इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के तौर पर मान्यता दिये जाने पर चर्चाएँ की गई हैं। अब प्रश्न यह है कि हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बने कैसे ? नियमानुसार, संघ की आमसभा में संगठन के कुल सदस्यों का दो तिहाई अर्थात कुल 193 सदस्यों में कम से कम 129 देशों के मत (वोट) द्वारा समर्थन के माध्यम से हिन्दी को आधिकारिक

दर्जा दिया जा सकता है। इसके साथ ही संबन्धित देशों को इसका वित्तीय भार भी वहन करना होगा। निश्चय ही इसके लिए कूटनीतिक प्रयास तेज करने होंगे तथा आर्थिक तौर पर भी तैयार रहना होगा।

यह हर्ष का विषय है कि भारत के राजनेताओं ने कई अवसरों पर संयुक्त राष्ट्र समेत अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिन्दी का प्रयोग कर इसे वैश्विक स्वरूप प्रदान करने का प्रशंसनीय कार्य किया है। वर्ष 1978 में तत्कालीन विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन में हिन्दी में भाषण देकर इतिहास रचा था। वर्ष 2007 में न्यूयार्क में सम्पन्न आठवें विश्व हिन्दी सम्मेलन संघ के तत्कालीन महासचिव बान की मून ने अपना भाषण हिन्दी में प्रारम्भ करते हुए इसे सौहार्द तथा समझ की भाषा के तौर पर उध्दृत किया था।

विगत वर्ष में सुप्रसिद्ध लेखिका गीतांजलि श्री कृति "रेत समाधि" एवं इसके अनुदित कृति का अंतर्राष्ट्रीय बूकर सम्मान से नवाजा जाना हिन्दी के विस्तृत होते फलक को दर्शाता है ।

विष्व में हिन्दी 150 विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है, लगभग 90 करोड़ लोगों द्वारा बोली - समझी जाती है। यह संप्रेषणीय, विपणन सहयोगी, कम्प्युटर-मित्रवत, वैज्ञानिक लिपिवाली समृद्ध वैश्विक भाषा है। हिन्दी का इस तरह से प्रयोग बढ़ता रहा तो निश्चय ही यह भाषा संयुक्त राष्ट्र संघ की सातवीं आधिकारिक भाषा के तौर पर सम्मानित हो जाएगी। आवश्यकता है:- संकल्प एवं सतत प्रयास की।

अंत में कवि अटल बिहारी वाजपेई के शब्दों में-------

"गूंजी हिन्दी विश्व में, स्वप्न हुआ साकार,
राष्ट्र संघ के मंच से हिन्दी की जयकार,
हिन्दी की जयकार, हिन्द हिन्दी में बोला,
देख स्वभाषा प्रेम, विश्व अचरज से डोला,
कह कैदी कविराय मेम की माया टूटी
भारत माता धन्य, स्नेह की सरिता फूटी"

डॉ. मनोज कुमार
उ.श्रे.स. (प्रशासन)
विक्रय विभाग
पटना मंडल कार्यालय

ज्ञान धारा

एक बार भगवान बुद्ध से उनके शिष्य आनंद ने पूछा- 'भगवन्! जब आप प्रवचन देते हैं तो सुनने वाले नीचे बैठते हैं और आप ऊंचे आसन पर बैठते हैं, ऐसा क्यों?' भगवान बुद्ध बोले- 'ये बताओ कि पानी झरने के ऊपर खड़े होकर पिया जाता है या नीचे जाकर?' आनंद ने उत्तर दिया- 'झरने का पानी ऊंचाई से गिरता है । अत: उसके नीचे जाकर ही पानी पिया जा सकता है।' भगवान बुद्ध ने कहा- 'तो फिर यदि प्यासे को संतुष्ट करना है तो झरने को ऊंचाई से ही बहना होगा न?' आनंद ने 'हां में उत्तर दिया।' यह सुनकर भगवान बुद्ध बोले- 'आनंद! ठीक इसी तरह यदि तुम्हें किसी से कुछ पाना है तो स्वयं को नीचे लाकर ही प्राप्त कर सकते हो और तुम्हें देने के लिए दाता को भी ऊपर खड़ा होना होगा। यदि तुम समर्पण के लिए तैयार हो तो तुम एक ऐसे सागर में बदल जाओगे, जो ज्ञान की सभी धाराओं को अपने में समेट लेता है ।

हिंदी के प्रयोग के लिए तकनीकी सुविधाएं

1. यूनिकोड एनकोडिंग क्यों?

यूनिकोड मानक सार्विक करैक्टर इनकोडिंग मानक है जिसका प्रयोग कंप्यूटर प्रोसेसिंग के लिए टेक्स्ट के निरूपण के लिए किया जाता है। कंप्यूटर पर एकरूपता के लिए एकमात्र विकल्प कैरेक्टर इनकोडिंग के लिए यूनिकोड है। इससे हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर अंग्रेजी की तरह ही सरलता से 100% कार्य किया जा सकता है, कंप्यूटर पर हिंदी में सभी कार्य जैसे वर्ड प्रोसेसिंग, डाटा प्रोसेसिंग, ई-मेल, वैबसाइट निर्माण आदि किए जा सकते हैं, हिंदी में बनी फाइलों का आसानी से आदान-प्रदान तथा हिंदी की-वर्ड पर गुगल या किसी अन्य सर्व इंजन पर सर्च कर सकते हैं।

राजभाषा विभाग ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एनकोडिंग की एकरूपता को ध्यान में रखते हुए सभी केंद्रीय कार्यालयों को कंप्यूटरों में यूनिकोड एनकोडिंग प्रणाली अथवा यूनिकोड समर्थित ओपन टाइप फोंट का ही प्रयोग करने का निदेश दिया है। परंतु कंप्यूटर परिचालन से संबंधित छोटी छोटी जानकारी के अभाव में कई केंद्रीय कार्यालय इस नि:शुल्क सुविधा की जगह विभिन्न प्रकार के फोंट और बहुभाषी सॉफ्टवेयरों का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे सूचना हस्तांतरण में तकनीकी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता । इस कारण हिंदी की फाइलों को अंग्रेजी की तरह आसानी से एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर पर, आदान-प्रदान (transfer) नहीं कर पाते हैं। हिंदी पाठ (text) को दूसरे सॉफ्टवेयर में जोड़ने (paste) में भी समस्या आती है। अत: सभी मंत्रालय एवं अधीनस्थ कार्यालय / उपक्रम / सरकारी बैंक केवल यूनिकोड समर्थित फोंट एवं यूनिकोड एनकोडिंग के अनुरूप सॉफ्टवेयर का ही प्रयोग करें। यूनिकोड एनकोडिंग को install/use करना बहुत आसान है। इसकी जानकारी राजभाषा विभाग की साइट (http://hindietools.nic.in) पर भी उपलब्ध है।

The latest electronic version of the Unicode Standard can be found at यूनिकोड साइट www.unicode.org. यूनिकोड कंसोर्शियम के प्रकाशनों में यूनिकोड मानक के साथ इसके अनुलग्नक और वर्ण शामिल हैं http://www.unicode.org/ucd/

2. यूनिकोड का महत्व तथा लाभ

- एक ही दस्तावेज में अनेकों भाषाओं के text लिखे जा सकते है।
- किसी सॉफ्टवेयर उत्पाद का एक ही संस्करण पूरे विश्व में चलाया जा सकता है। क्षेत्रीय बाजारों के लिए अलग से संस्करण निकालने की जरूरत नहीं पड़ती।

3. कंप्यूटरों में हिंदी में कार्य करने के लिए 3 की-बोर्ड विकल्प हैं:-

- इंस्क्रिप्ट
- रेमिंग्टन
- फोनेटिक

4. नॉन-यूनिकोड हिंदी सामग्री को यूनिकोड सामग्री में परिवर्तित करना

यह टूल एक फॉन्ट में लिखे गए डाटा को दूसरे फॉन्ट में बदलता है। यह कई तरह की फाइलों पर इस्तेमाल किया जा सकता है जैसे - माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल, टैक्सट फाइल इत्यादि।

सभी प्रकार के स्टोरेज एवं फोंट कनवर्टर डाउनलोड करने के लिए http://bhashaindia.com से BIL Converter 32-bt 4.1 तथा TBIL Convertor 64-bit 4. डाउनलोड कर सकते हैं । इस पैकेज के माध्यम से भी नॉन-यूनिकोड सामग्री को यूनिकोड आधारित मंगल फोट में बदला जा सकता है।

5. गूगल वाइस टाइपिंग

अपनी आवाज़ के साथ टाइप करे, जिसे आसान तरीके से दस्तावेज में अपनी आवाज के साथ टाइप कर सकते हैं।

फिलहाल यह सुविधा क्रोम बाउजर में ही उपलब्ध है।

- सबसे पहले यह सुनिश्चित करें की आपके कंप्यूटर से एक माइक्रोफोन जुड़ा हुआ है और वह काम करता है तथा एक जी-मेल का यूजर आईडी पासवर्ड होना जरूरी है।
- Chrome ब्राउज़र में http://docs.google.com ओपन करें । जी-मेल आईडी से लोगिन करें
- गूगल डॉक्स में एक नया दस्तावेज़ खोलें ।

- उपकरण (Tools) मेनू वॉइस टाइपिंग (Voice Typing) पर क्लिक करें। पॉप-अप माइक्रोफोन बॉक्स से भाषा (हिंदी) का चयन करे ।
- आप पाठ में बोलने के लिए तैयार है, तो माइक्रोफोन बॉक्स पर क्लिक करें ।
- सामान्य गति और वोल्यूम से स्पष्ट रूप से अपना पाठ बोलें।
- रोकने के लिए माइक्रोफोन पर पुन: क्लिक करें

वॉइस टाइपिंग की गलतियों में सुधार

आवाज के साथ टाइप करते हुए अगर गलती हो जाए तो गलती पर कर्सर ले जाकर और माइक्रोफोन से पुन: बोल कर ठीक कर सकते हैं। गलती सुधारने के बाद आवाज टाइपिंग जारी रखना चाहते हैं, आप वहां कर्सर वापस ले जाए।

6. हिंदी स्वयं शिक्षण लीला-प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ पाठ्यक्रम

यह पैकेज विश्व रूप से सरकारी एवं अर्धसरकारी कार्यालयों, सार्वजनिक प्रतिष्ठानों, निगमों और बैंकों के उन कर्मचारियों के लिए लाभप्रद है, जो हिंदी में सभी कार्यालयीन क्रियाकलापों को संपादित करने के लिए क्षमता अर्जित करना चाहते हैं।

इस पैकेज का पूर्ण उपयोग करने के लिए प्रयोक्ता को हिंदी प्रवीण स्तर तक का वाचिक और लिखित हिंदी का पूर्व कार्यसाधक ज्ञान होना आवश्यक है। हालांकि, इसके अतिरिक्त इसका उपयोग वे लोग भी कर सकेगे जिनकी मातृभाषा हिंदी तो है किंतु इसकी भाषा संरचना, अभिव्यक्ति और कार्यालयीन हिंदी की तकनीकी शब्दावली के अभाव में कार्यालयीन कार्य को हिंदी में करने में अपने को पूर्णत सक्षम नहीं कर पाते । समान रूप से यह पैकेज अध्यापकों के लिए शिक्षण में पूरक सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग किए जाने हेतु भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस पैकेज का प्रयोग वैयक्तिक रूप में करने के साथ ही विनिर्दिष्ट प्रशिक्षण केंद्रों के माध्यम से सामूहिक स्तर भी हो सकता है।

लीला (LILA-Learn Indian Languages through Artificial intelligence) स्वयं शिक्षण मल्टीमीडिया पैकेज है। मोबाइल तथा वेब पर बोला हिंदी स्वयं-शिक्षण के पाठ्यक्रम कई भाषाओं (अंग्रेजी, कन्नड, मलयालम, तमिल, तेलुगु, बंगला, असमी, उड़िया, मणिपुरी, मराठी, पंजाबी, कश्मीरी, गुजराती, नेपाली तथा बोडो) के माध्यम सें हिंदी सीखने के लिए नि:शुल्क उपलब्ध है।

Android based मोबाइल तथा टैबलेट में Play Store से lila-rajbhasha एप्प डाउनलोड कर सकते हैं।

वैब वर्जन http://hindietools.nic.in या http://lilappp.rb-aai.in/ पर नि:शुल्क उपलब्ध।

7. मशीन अनुवाद

क. भारत सरकार के इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के प्रावधान के अंतर्गत Machine Assisted Translation Tool (Tourism, Health & Agriculture domain) www.tdil-do.gov.in

ख. मंत्र-राजभाषा एक मशीन साधित अनुवाद सिस्टम है, जो राजभाषा के प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि, लघु उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं बैंकिग क्षेत्रों के दस्तावेजों का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करता है। मंत्र टेक्नॉलाजी पर आधारित यह सिस्टम राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक पुणे के एप्लाइड आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस ग्रुप की मदद से विकसित कराया है। https://mantra-rajbhasha.rb-aai.in तथा http://hindietools.nic.in के माध्यम से ।

ग. गूगल अनुवाद

www.translate.google.com गूगल अनुवाद fast एवं General Purpose है www.translate.google.com/toolkit गूगल में अकाउंट बनाकर अनुवाद करने पर मेमोरी में से लेता है जिससे भविष्य में simillar text आने पर सही अनुवाद करता है।

इत्मीनान

वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक दौर में मनुष्य का जीवन मशीन की तरह हो गया है वह अल्प समय में बहुत कुछ करना व पाना चाहता है इस हेतु वह घड़ी की सुई की तरह दौड़ता हुआ काम करता है अपने लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर सदैव गतिमान रहता है इस दौड़ भाग के साथ बहुत कुछ पाने की लालसा में वह जीवन जीना भूल गया है । हर समय अपने लक्ष्यों को पूरा करने के लिए जीवन के सुख चैन को भूल गया है वह अपने स्वास्थ का ख्याल किए बिना तनाव की स्थिति में काम करता है जिसके परिणाम स्वरूप युवा अवस्था में ही अनेक रोगो का शिकार होता जा रहा है । आज आवश्यकता है उसे इत्मीनान से जीने की इत्मीनान का अर्थ है "सकून"

"तनाव और दबाव से झटपट आराम पाना हो तो इत्मीनान से जीकर देखिए" - लिली टामलिन

आज के टेकनालाजी प्रधान युग में मनुष्य हर समय परेशान व अधिकतम रूप से तनाव में दिखायी देता है उसके पास रोज के कामों की सूची लिए सुबह की शुरुवात होती है व अपूर्ण हुए कार्यो व अगले दिन करने वाले कामों की चिंता मय सोच के साथ उसके दिन का अंत होता है । इस प्रकार वह अपने जीवन दैनिक साप्ताहिक मासिक व वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु दौड़ता रहता है । पहले अर्थव्यवस्था मानव के कल्याण के लिए बनाई जाती थी आज अर्थ व्यवस्था के कल्याण हेतु मानव है । काम के हद से ज्यादा घंटों ने हमारी हालत चरखी मे लगे गन्ने जैसी कर दी है जिसको आखिरी बूंद तक निचोड़कर कचरे मे फैक दिया जाता है। इसके चलते अनिंद्रा माइग्रेन हाइपरटेंशन दमा गेस्ट्रोइंटेस्टाइनल ट्रब्ल्स जैसी तनाव जनित बीमारियो के रोगियों की संख्या बढ़ गई है शरीर के साथ इस प्रकार की कार्य संस्कृति हमारे मानसिक स्वास्थ्य पर भी दुषप्रभाव डाल रही है।

इन सब से छुटकारा पाने के लिए इत्मीनान से जीने के लिए वेकेशन लेता है अब तो वेकेशन भी स्ट्रेसफुल होने लगे है पहले प्लेन, कार या ट्रेन की थकान देने वाली यात्रा करता है फिर एकतयशुदा समय मे ज्यादा से ज्यादा साइट्स देखने के लिए यहा वहा भागता है बीच बीच मे इन्टरनेट कैफे मे जाकर मेल चेक करता है इन्सट्राग्राम,वाटसप पर स्टोरी व फोटो डालता है फिर हर पल मोबाइल पर उसकी मिलने वाली प्रतिक्रिया को चेक करता है । यह सब करते हुए वह इतना थक जाता है की छूटियों की थकान को उतारने के लिए क्या करे इस प्रकार की छुट्टियाँ उसे ज्यादा थका देती है ।

आस्ट्रिया में इस प्रकार के तनाव को दूर करने के लिए स्लो होटल का ट्रेंड चालू किया गया है जहा जल्दी को प्रमोट करने वाली सभी वस्तुए जैसे मोबाईल टीवी लपटाप आदि पर बैन है वहा स्लो प्लेजर्स अर्थात इत्मीनान के कामों से मिलने वाले सुख अर्थात बागवानी पैदल टहलना पढ़ना योग आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है। क्योकि आज मानव जाति बड़ी तेजी से एक नई बीमारी से पीड़ित होती जा रही है शार्ट अंटेंशन स्पान अर्थात किसी भी चीज पर ज्यादा देर एकाग्र न रह पाना ।

आज हमारे विचार हमारी भावनाएं हमारी चाहते सब चंचल होती जा रही है जहा देखो वहा ज़िंदगी पागलो के समान भागी जा रही है इंसान के चारों और मौजूद हर चीज इतनी तेजी से गति कर रही है दृश्य इतनी तेजी से बदल रहे है की मनुष्य के लिए अपने भीतर और बाहर के वातावरण का संतुलन बिठा पाना नामुमकिन सा हो गया है । हर दम तेजी और उत्तेजना से भरी जिंदगी की वजह से हार्ट डीसीज किडनी फेलियर और कैंसर जैसे घातक रोगो से मरने वालों की सख्या में तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है । हम भूल चुके है की जीवन की तमाम जद्दोजहद के पीछे हमारा मकसद अंतत; सुख -चैन हासिल करना ही तो है हम है कि "आधी छोड पूरी को धावे" के चक्कर में जीवन का आनंद लेना ही भूल गए है ।

इस प्रकार तेज और तेज भागने की प्रक्रिया सबसे अधिक दुषप्रभाव हमारे पारिवारिक जीवन पर हो रहा है चूंकि आजकल हर किसी का शिडयूल एक्टिविटिज से भरा रहता है बड़ो से लेकर बच्चो तक हर कोई एक एक पल का सदुपयोग करने पर आमादा है आज बच्चे स्कूल, स्कूल से ट्यूशन, ट्यूशन से पियानो क्लास, पियानो क्लास से फुटबाल प्रैक्टिस न जाने किन किन गतिविधियों में व्यस्त रहकर बचपन खोते जा रहे है ।

इत्मीनान से जीने के हमारे फ़ल्स्फ़े का मतलब है कि आपके जीवन की गति पर स्वयं आपका नियंत्रण हो आप खुद तय करे कि आपको कब कितना तेज चलना है ।बेहतर तो होगा वर्तमान को इत्मीनान से जीया जाए ।

"सब कुछ पा लेने की चाहत में
पाए हुए को भोग न पाए
अनिश्चित भविष्य की खातिर
स्वर्णिम वर्तमान को गवाए"

इन्द्रप्रीत गुलाटी
सहायक सचिव (राजभाषा)

भारतीय पुरातत्व से संबन्धित जानकारी

एलोरा की गुफाएँ

स्थान

ये गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य की सह्याद्रि पर्वतमाला में अजंता की गुफाओं से लगभग 110 कि.मी. की दूरी पर दक्षिण पश्चिम दिशा में स्थित हैं।

संख्या

एलोरा में कुल 34 गुफाएँ हैं जिनमे से 17 ब्राह्मण, 12 बौद्ध और 5 जैन धर्म से संबन्धित हैं। सभी उपलब्ध गुफाओं के मंदिरों में से सबसे उल्लेखनीय मंदिर कैलासा (गुफा संख्या 16) है, जिसका नाम हिमालय के कैलास पर्वत (हिन्दू मान्यताओं के अनुसार भगवान शिव का निवास स्थान) के नाम पर रखा गया हैं।

विकास

इनका विकास विदर्भ, कर्नाटक और तमिलनाडू के विभिन्न शिल्प संघो द्वारा पाँचवीं शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य किया गया।

इनकी शुरुआत राष्ट्रकूट वंश के शासकों द्वारा की गई थी एवं विषय और स्थापत्य शैली के रूप में प्राकृतिक विविधता को दर्शाती हैं।

विशेष

इन गुफाओं को भी अजंता की गुफाओं की तरह ही वर्ष 1983 में युनेस्को ने विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया था।

एलोरा की बौद्ध, ब्राह्मण और जैन गुफाएँ मध्य भारत में पैठण से उज्जैन जाने वाले व्यापारिक मार्ग पर बनाई गई थी।

अजंता की गुफाएँ

स्थान

महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद (नवीन नाम- छत्रपति संभाजी नगर) जिले में वाघोरा नदी के समीप सह्याद्रि पर्वतमाला की रॉक-कट गुफाओं की एक श्रंखला के रूप में स्थित हैं।

संख्या

कुल 29 गुफाएँ हैं जो कि सभी बौद्ध हैं। जिनमे से 25 गुफाएँ विहार या आवासीय गुफाओं के रूप में तथा 4 गुफाएँ चैत्य या प्रार्थना स्थल के रूप में प्रयोग में ली जाती थी।

विकास

गुफाओं का विकास 200 ईसा पूर्व से 650 ईस्वी के मध्य हुआ था।

इनसे संबन्धित जानकारी चीनी बौद्ध यात्रियों फ़ाहियान और ह्वेन त्सांग के यात्रा वृतांतो में पाई जाती हैं।

वाकाटक राजाओं, जिनमे हरिसेना एक प्रमुख था, के संरक्षण में अजंता की गुफाएँ बौद्ध भिक्षुओं द्वारा उत्कीर्ण की गई।

चित्रकारी

इन गुफाओं में आकृतियों को फ्रेस्को पेंटिंग का उपयोग करके दर्शाया गया हैं।

इन गुफाओं के चित्रों में लाल रंग की प्रचुरता पाई जाती हैं किन्तु नीले रंग की अनुपस्थिति हैं।

इन चित्रों में समान्यत: बुद्ध और जातक कहानियों को दर्शाया गया हैं।

विशेष

इन गुफाओं को वर्ष 1983 में युनेस्को ने विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया था।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निगम का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 20.04.2023 को शिमला मण्डल कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 25.05.2023 को रायपुर मण्डल कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा दिनांक 17.06.2023 को लखनऊ मण्डल कार्यालय का निरीक्षण

प्रादेशिक प्रबन्धक(मा.सं.वि./सं.वि.) निदेशक क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र के सम्मेलन में हिन्दी आलेख पुस्तिका का विमोचन करते हुए निगम के अध्यक्ष, श्री सिद्धार्थ महान्ति तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण

उत्कृष्ट राजभाषा कार्यानव्यन हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समति मुंबई उपक्रम द्वारा निगम को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया । पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री सलिल विश्वनाथ, कार्यकारी निदेशक (मा.सं.वि. /सं.वि.)

प्रस्तुत है

ऑनलाइन भी उपलब्ध

एलआईसी का जीवन आज़ाद

Plan No. : 868

एक नॉन-लिंक्ड़, असहभागी, व्यक्तिगत, बचत, जीवन बीमा योजना

UIN: 512N348V01

तनाव से आज़ादी
खुशियों की चमक

आकर्षक सीमित प्रीमियम भुगतान अवधि

न्यूनतम मूल बीमा राशि ₹2 लाख.
अधिकतम मूल बीमा राशि ₹5 लाख प्रति जीवन

पॉलिसी अवधि: 15-20 साल

LIC digital डाउनलोड कीजिए एलआईसी मोबाइल ऐप 'एलआईसी डिजिटल'

कॉल सेन्टर सर्विस (022) 6827 6827

विज़िट करें:licindia.in

हमारा वॉट्सएप नं. 8976862090 कहिए 'Hi'

अधिक जानकारी के लिए अपने एजेंट/नज़दीकी एलआईसी शाखा से संपर्क करें या अपने शहर का नाम SMS करें 56767474 पर.

भ्रामक फोन कॉल्स और झूठे/धोखाधड़ी वाले ऑफर्स से सावधान रहें. आईआरडीएआई बीमा पॉलिसी बेचने या बोनस की घोषणा करने या प्रीमियम के निवेश जैसी गतिविधियों में शामिल नहीं होता. जनता से निवेदन है कि ऐसे फोन कॉल प्राप्त करने पर वे पुलिस में शिकायत दर्ज कराएं.

जोखिम घटकों, नियम व शर्तों के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कृपया बिक्री से पहले सेल्स ब्रोशर को ध्यानपूर्वक पढ़ लें.

हमें फॉलो करें: YouTube LIC India Forever

IRDAI Regn No.: 512

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

हर पल आपके साथ

LIC / M1 / 2022-23 / 15 / Hin